www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

आदर्श कहानियाँ

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

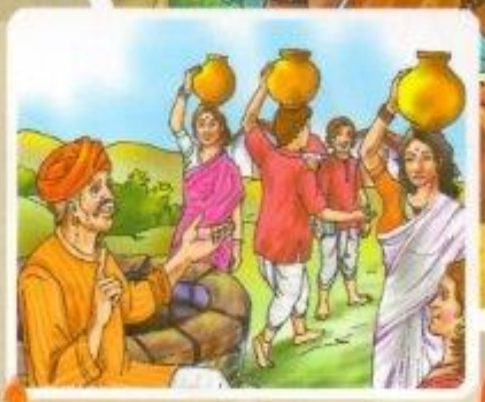

10

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

लालची की दुर्दशा

एक शिकारी ने हाथी का शिकार किया और उसके दाँत निकाल लिए। इतने में एक सर्प निकला, उसने शिकारी को काट खाया, वह सांप के ऊपर ही गिर पड़ा और सांप भी मर गया । हाथी के मरने से एक खरगोश का कचूमर पहले ही निकल चुका था। एक सियार उधर से निकला, तो इतने शिकार हाथी, सर्प, शिकारी, खरगोश आदि को एक साथ पड़े देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। महीनों के लिए भोजन मिल गया। उसने शिकारी का धनुष पड़ा देखा, उसमें ताँत की डोरी लगी थी। उसने सोचा—"पहले इस छोटी खुराक को खत्म कर लें, तब बड़ों पर हाथ डालेंगे।" यह सोचकर उसने ताँत को जैसे ही चबाया, वैसे ही वह टूटी और धनुष का सिरा उसके मुँह में जोर से लगा और वहीं ढेर हो गया। इस प्रकार लोभ-लालच के कारण सभी ने अपने प्राण गँवा दिए। लालच विनाश का कारण बनता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्चा अधिकारी

एक बार विधाता ने अपना दूत पृथ्वी पर यह पता लगाने के लिए भेजा कि पृथ्वी में स्वर्ग प्राप्ति के योग्य कितने भक्तगण हैं ?

दूत ने आकर संसार के हजारों भक्तों एवं पुजारियों के नाम-पते अपने रजिस्टर में अंकित कर लिए। दूत के विदा होते समय उसे एक अंधा चौराहे पर लालटेन जलाकर खड़ा मिला। दूत ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

विधाता ने जब दूत का रजिस्टर देखा तो उसमें उस अंधे का नाम न था। विधाता ने स्वर्ग के सच्चे अधिकारी की परिभाषा बताते हुए, दूत के रजिस्टर को रद्द कर दिया। उन्होंने उस अंधे को स्वर्ग का सच्चा अधिकारी बताया, जो पूजा-पाठ तो नहीं करता था किंतु विश्व-व्यवस्था में भगवान का सहयोग कर अंधकार में राहगीरों का मार्गदर्शन कर रहा था। दूसरों की सेवा करना ईश्वर तक पहुँचने की बहुत बड़ी सीढ़ी है।

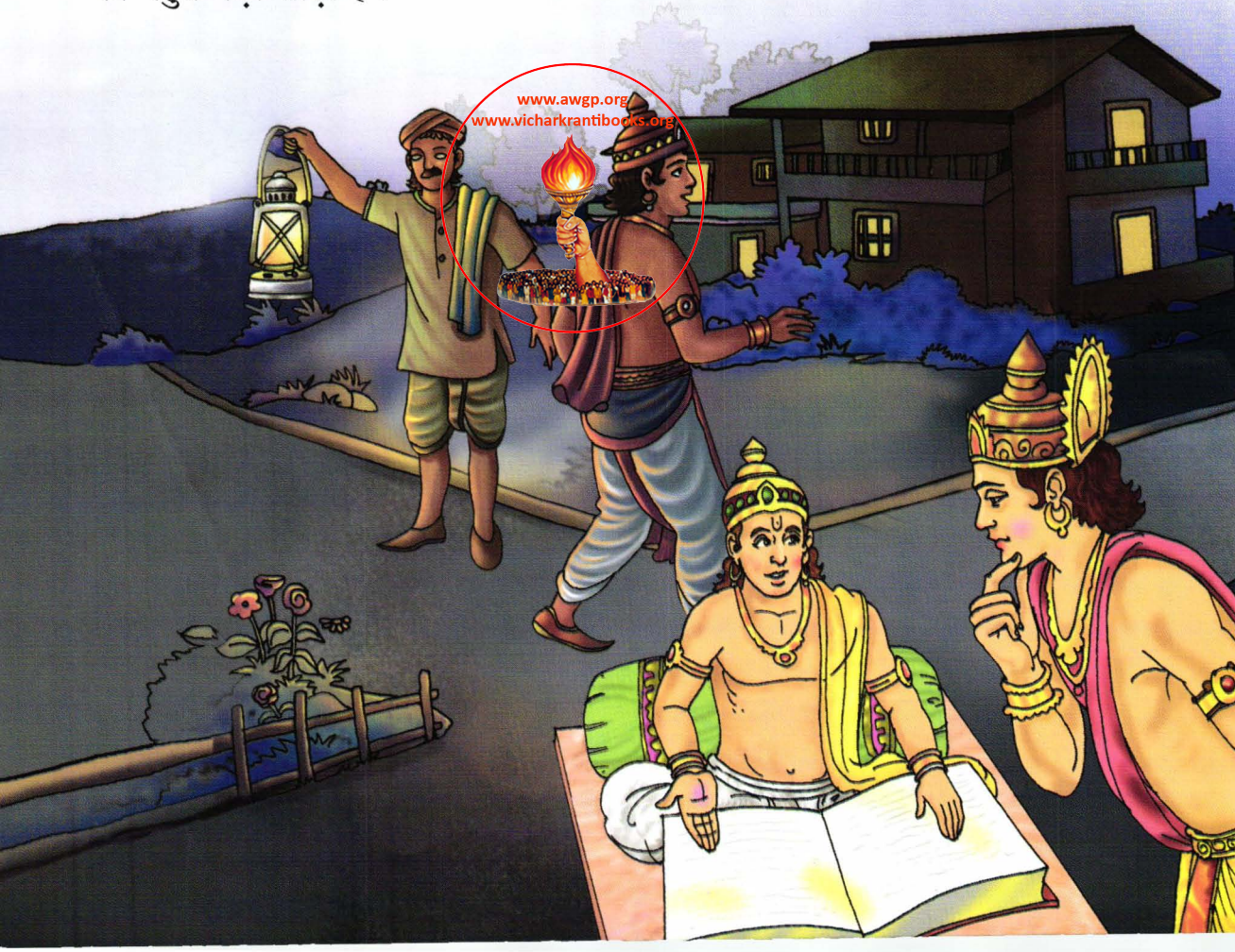

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसान का राजमहल

एक किसान और उसकी पत्नी साथ-साथ खेत पर जा रहे थे। पत्नी राजमहल की शोभा देखती पीछे रह गई। वह उसके वैभव से बहुत प्रभावित हुई और कुछ सोचने लगी।

किसान ने पुकारा—"व्यर्थ क्यों समय खराब करती है? इस महल से तो हमारा महल सौ गुना अच्छा है।"

राजा ऊपर बैठा यह बात सुन रहा था। उसने दोनों को बुलाकर पूछा—"भला तुम्हारा महल कहाँ है?"

किसान ने कहा—"हरे-भरे खेतों का फला-फूला क्षेत्र ही हमारा महल है, जिससे असंख्यों का पेट भरता है। आपके महल में वह विशेषता कहाँ है?"

राजा का मस्तक नीचा हो गया।

चाहे व्यक्ति हो या वस्तु, जो दूसरों के लिए उपयोगी हो, उसी की सार्थकता है।

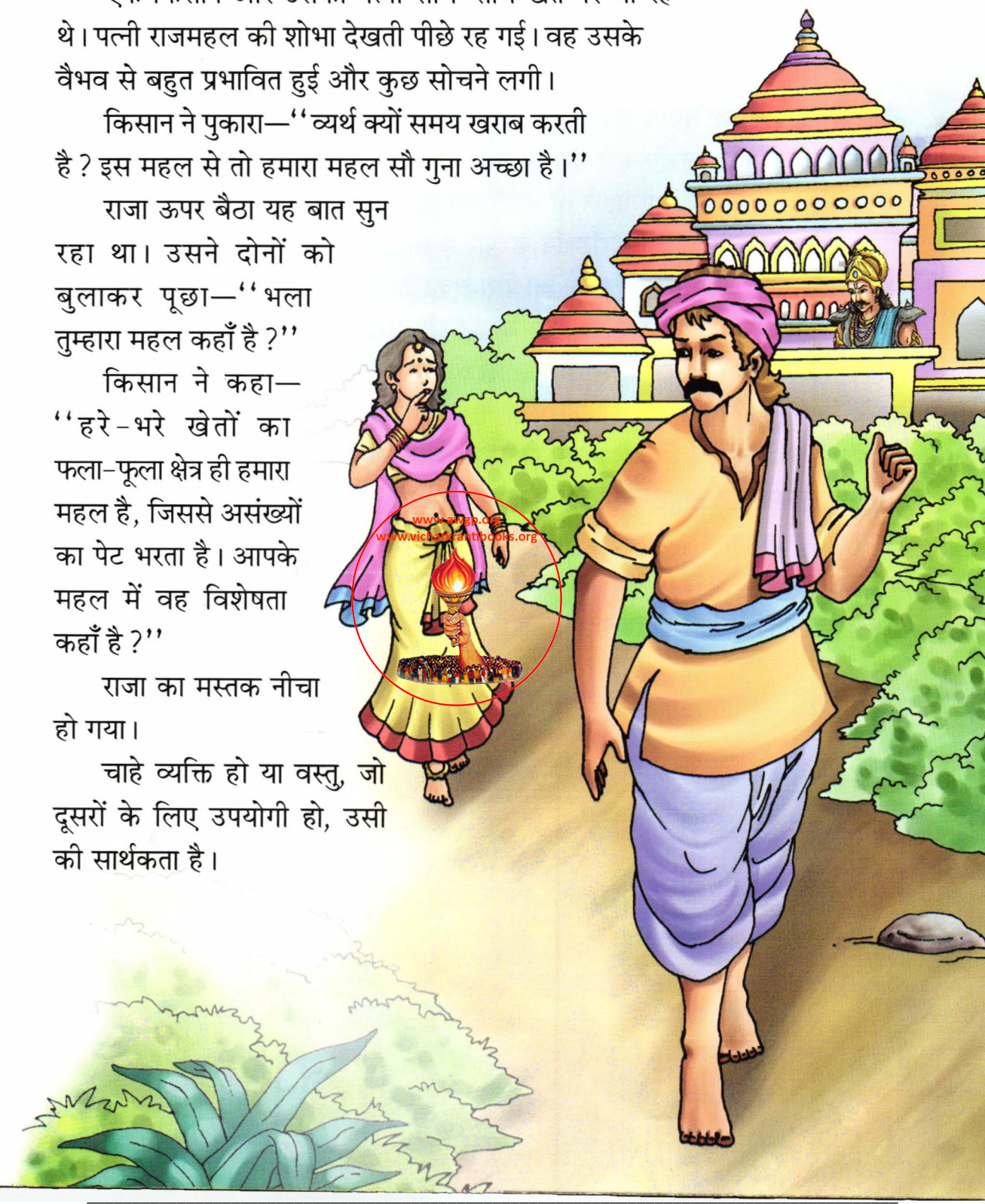

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उदारता ने महान बनाया

जीवन के छोटे-छोटे क्षण भी मनुष्य को महान बनाते हैं।

नेपोलियन तब लड़का था। खेलने गया, तो भाग-दौड़ में सामने से आती एक लड़की से टकरा गया। लड़की गरीब घर की थी। फल का टोकरा लेकर जा रही थी। टक्कर से टोकरा गिरा और फल गंदगी-कीचड़ में गिर गए। लड़की रोने लगी। उसने सोचा आज की मजदूरी भी गई और मालकिन से दंड भी भुगतना पड़ेगा।

झंझट से बचने के लिए पहले तो नेपोलियन का मन आया कि जल्दी से भाग चलें। पीछे उसका मन लड़की की परिस्थिति के बारे में सोचकर पिघल गया। वह लड़की को अपने घर ले गया और गिरे हुए फलों का पैसा चुका देने का वायदा किया। घर पहुँचने पर नेपोलियन ने सारा किस्सा अपनी माँ को बताया और पैसा लड़की को चुका देने के लिए कहा। माँ कठोर स्वभाव की थी पर विवेकशील थी साथ में पैसे की तंगी थी। उन्होंने विचार करके निर्णय लिया कि लड़की को पैसा तो चुका दिया जाएगा; पर डेढ़ महीने तक नेपोलियन को नाश्ता न मिलेगा। उसी से पेशगी देकर राशि की भरपाई करनी होगी।

नेपोलियन खुशी-खुशी तैयार हो गया। कर्त्तव्य-न्याय निभाने के लिए डेढ़ महीने एक समय भोजन करके ही काम चलाया। ऐसे उदारचेता ही भविष्य में महान बनते हैं। माता यदि कठोर बनकर कोई निर्णय लेती भी तो उसमें भी बच्चे का हित करने, उसमें अच्छे संस्कार डालने का भाव ही छिपा रहता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

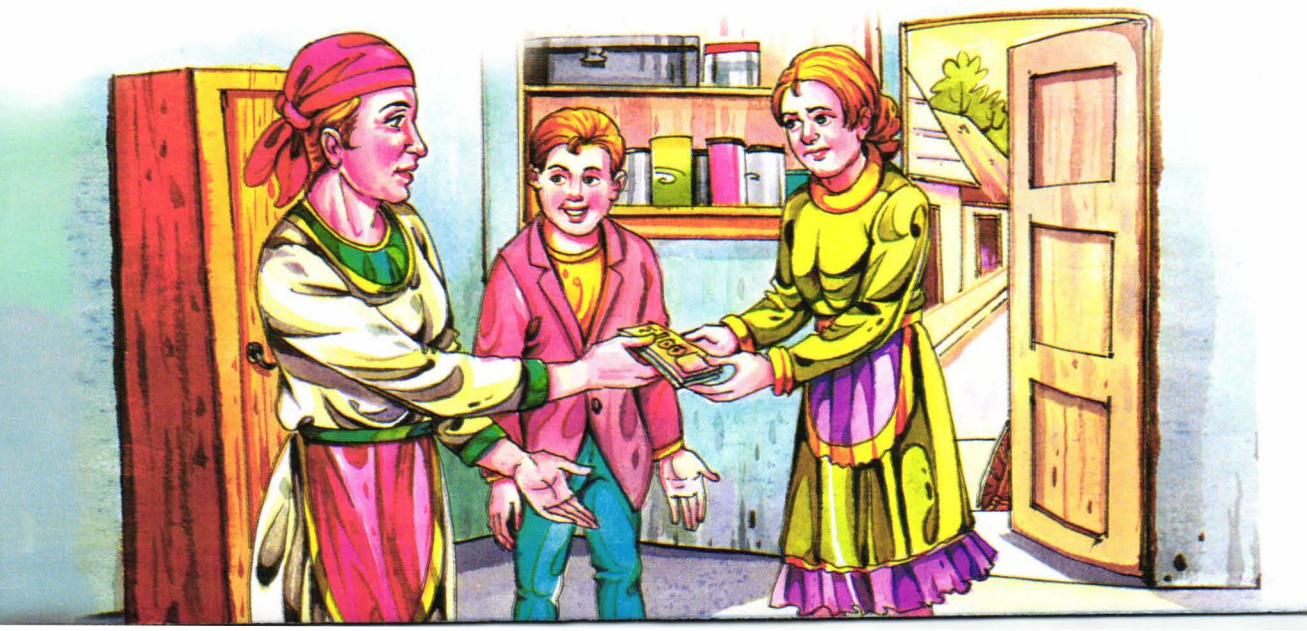

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धूर्तों से सावधान

एक बार एक पंडित ने गंगा नदी में स्नान किया। फिर वे तट पर बैठकर पूजा करने लगे। जल में से घड़ियाल ने निकल कर उनके सामने एक मोतियों का हार रख दिया। संत उसे पाकर बहुत प्रसन्न हुए और उसकी भक्ति भावना देखकर आशीर्वाद देने लगे।

घड़ियाल ने कहा—"देव! मैं अब बूढ़ा हो चला हूँ। त्रिवेणी पहुँचकर वहीं मरना चाहता हूँ। मेरे पास ऐसे सौ हार हैं। उन्हें भी वहीं दान करूँगा। मैंने रास्ता देखा नहीं है। यदि कृपापूर्वक मुझे वहाँ तक ले चलें, तो अपना मोती का खजाना आपको ही दान कर दूँगा।" पंडित सहमत हो गए। घड़ियाल ने उन्हें पीठ पर बिठा लिया। नदी में तैरते हुए ही उनकी यात्रा चल पड़ी।

मझधार में पहुँचकर घड़ियाल हँसा और बोला—"लोभ के कारण मनुष्य इतना अंधा हो जाता है कि किसी दुर्घटना की बात भी उसके मन में नहीं आ पाती।"

घड़ियाल ने करवट बदली। पंडित नदी में डूबने लगे। घड़ियाल ने आसानी से उन्हें खा लिया।

धूर्तों और चालबाजों से सावधान रहने में ही भलाई है।

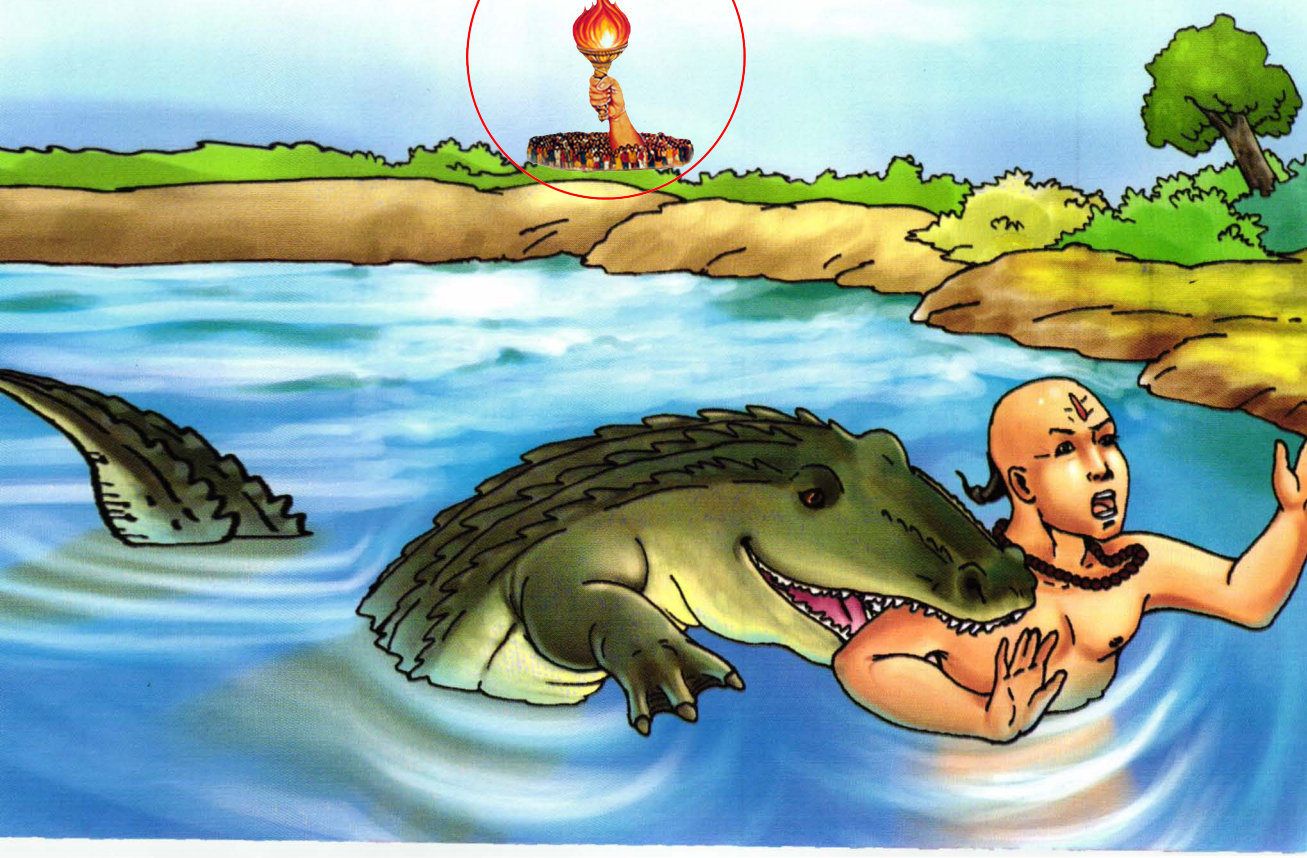

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

द्वारपाल हट गए

एक व्यक्ति राजमुकुट और तलवार उपहारस्वरूप लेकर भगवान के पास पहुँचा। वह उनसे एकांत में भेंट करना चाहता था। द्वार पर खड़े देवदूतों ने कहा—"भाई! भगवान को राजमुकुट से क्या मतलब? वे तो स्वयं ब्रह्मांडनायक हैं। तलवार की उन्हें आवश्यकता नहीं, वे तो स्वयं वेद रूप हैं। वे ज्ञान से ही बंधनों को काट डालते हैं और कुछ हो तो बताओ?" यह चर्चा चल ही रही थी तभी उसने एक वृद्ध को ठोकर लगकर गिरते देखा।

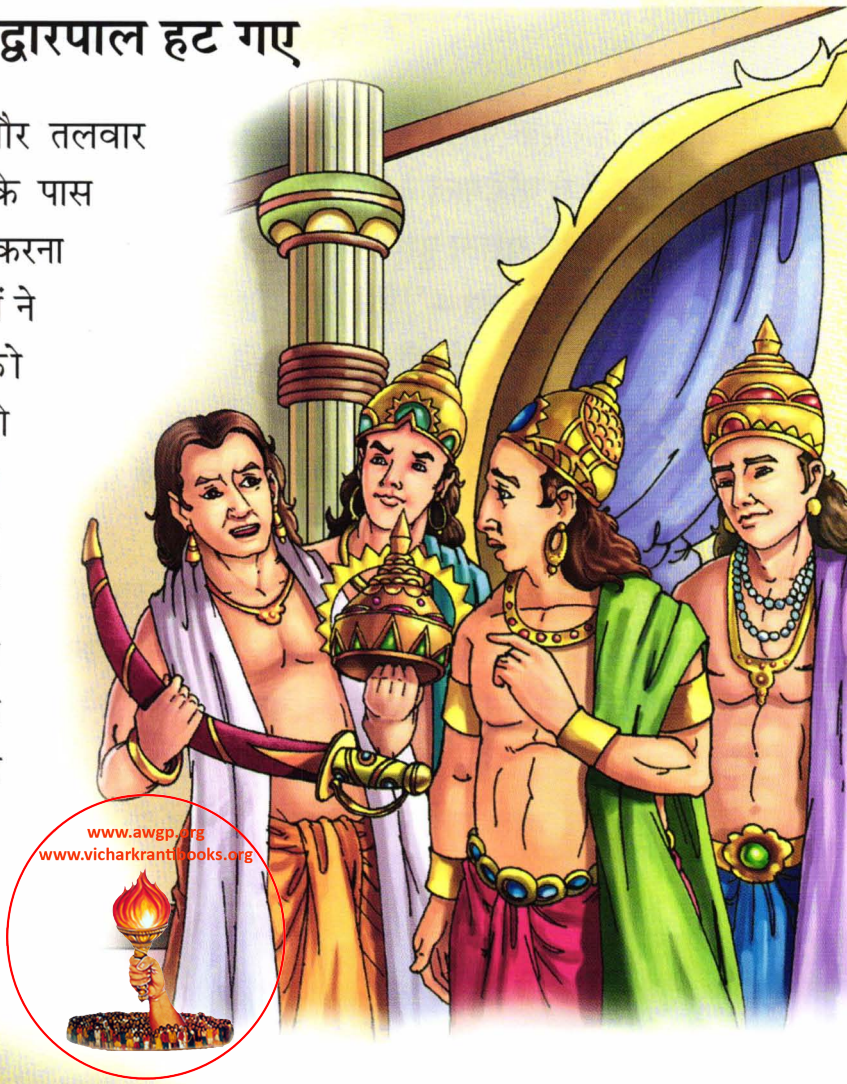

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

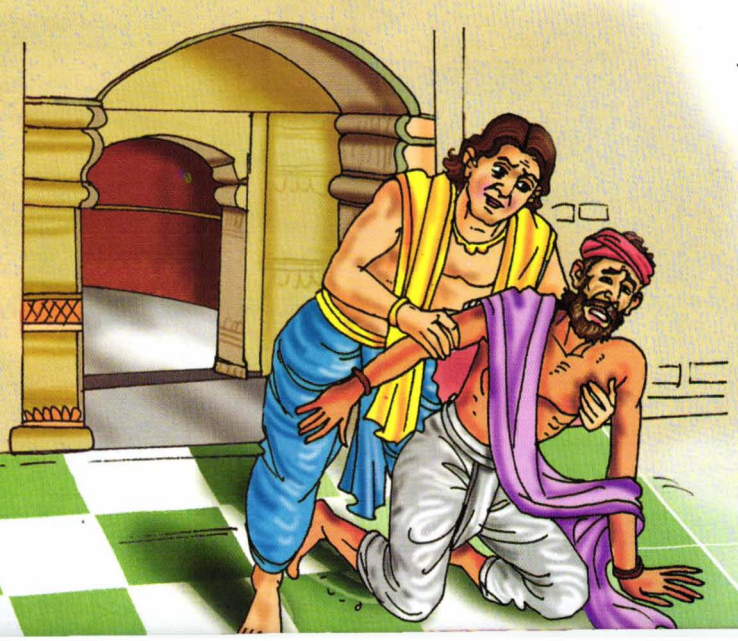

उसकी आँखों में आँसू आ गए। दौड़कर उसे सँभाला, मन में आया चलकर भगवान से पूछें— आखिर असहाय जन दुखी क्यों हैं? वह लौटा तो देखा, रोकने वाले द्वारपाल वहाँ से हट गए थे, क्योंकि उस व्यक्ति ने एक नेक काम किया उसके कारण भगवान के पास जाने का लाभ मिला।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जड़ें कमजोर थीं

एक रात भयंकर तूफान आया। सैकड़ों विशालकाय वृक्ष धराशायी हो गए। अनेक छोटे-छोटे वृक्ष भी थे जो बच तो गए थे, पर बुरी तरह सकपकाए खड़े थे। प्रातःकाल आया, सूर्य ने अपनी रश्मियाँ धरती पर फेंकी। डरे हुए पौधों को देखकर किरणों ने पूछा—"बालको! तुम इतना सहमे हुए क्यों हो?" किशोर पौधों ने कहा—"देवियो! ऊपर देखो हमारे कितने पुरखे धराशायी पड़े हैं। रात के तूफान ने उन्हें उखाड़ फेंका। न जाने कब यही स्थिति हमारी भी आ बने।"

किरणें हँसी और बच्चों से बोलीं—"तात! आओ इधर देखो, यह वृक्ष तूफान के कारण नहीं जड़ें खोखली हो जाने के कारण गिरे, तुम अपनी जड़ें मजबूत रखना, तूफान तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं पाएँगे।" मनुष्यों का दीन-हीन होना विचित्र बात है। जब बिना साधनों के जंगल के जानवर स्वस्थ, नीरोग और आमोद-प्रमोद का जीवन जी लेते हैं तो मनुष्य दुःखों का रोना क्यों रोए। स्पष्ट है कि उसकी तृष्णा, वासनाएँ और अहंता ही उसे श्मशान के भूत की तरह सताती रहती हैं। यदि व्यक्ति अपने दायरे को संकीर्ण न बनाता, इन तृष्णाओं के चंगुल में न फँसता तो दीन-दुखी जीवन जीने की नौबत ही क्यों आती।

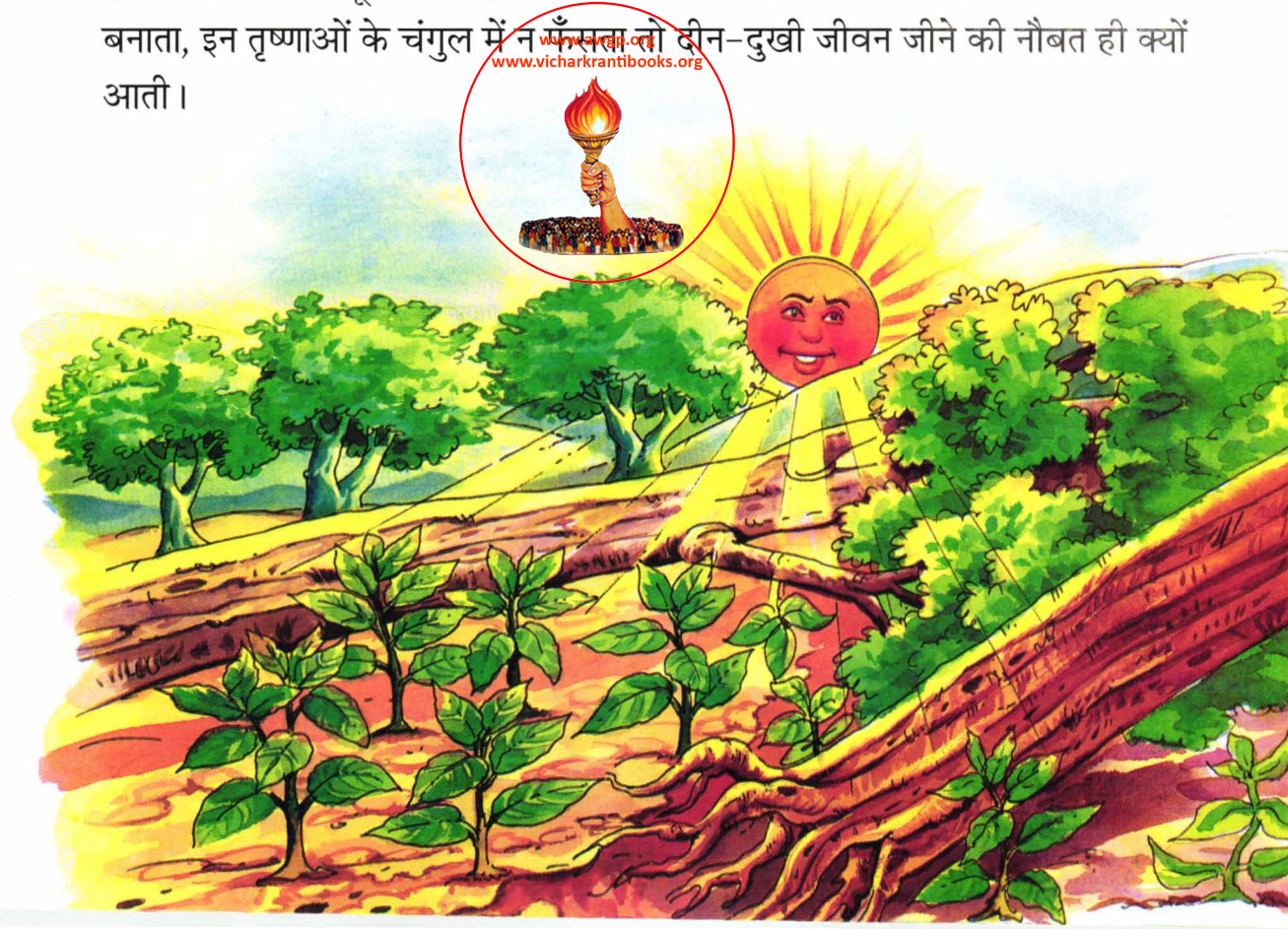

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंधी प्रथा

साधु की कुटिया में एक बिल्ली रहने लगी और पल गई, वह थी बड़े चंचल स्वभाव की। इधर-उधर खट-पट करती और भजन से ध्यान उचटाती।

साधु ने दयावश बिल्ली को भगाया तो नहीं, पर एक मध्यवर्ती उपाय निकाल लिया। जब तक भजन-ध्यान करते, बिल्ली को खूँटे से बाँध देते। इस प्रकार अड़चन दूर हो गई। भजन-ध्यान ठीक प्रकार चलने लगा।

शिष्यगणों ने यह देखा, तो अनुमान लगाया, पास में बिल्ली बाँध रखने से साधना की सिद्धि होती है। बूढ़े साधु के मरते ही उनके समस्त शिष्यों ने बिल्ली पकड़ कर खूँटे से बाँधने की प्रथा भजन के साथ जोड़ ली, जो गलत थी।

पुरानी बेकार परंपराओं को छोड़ते जाना चाहिए।

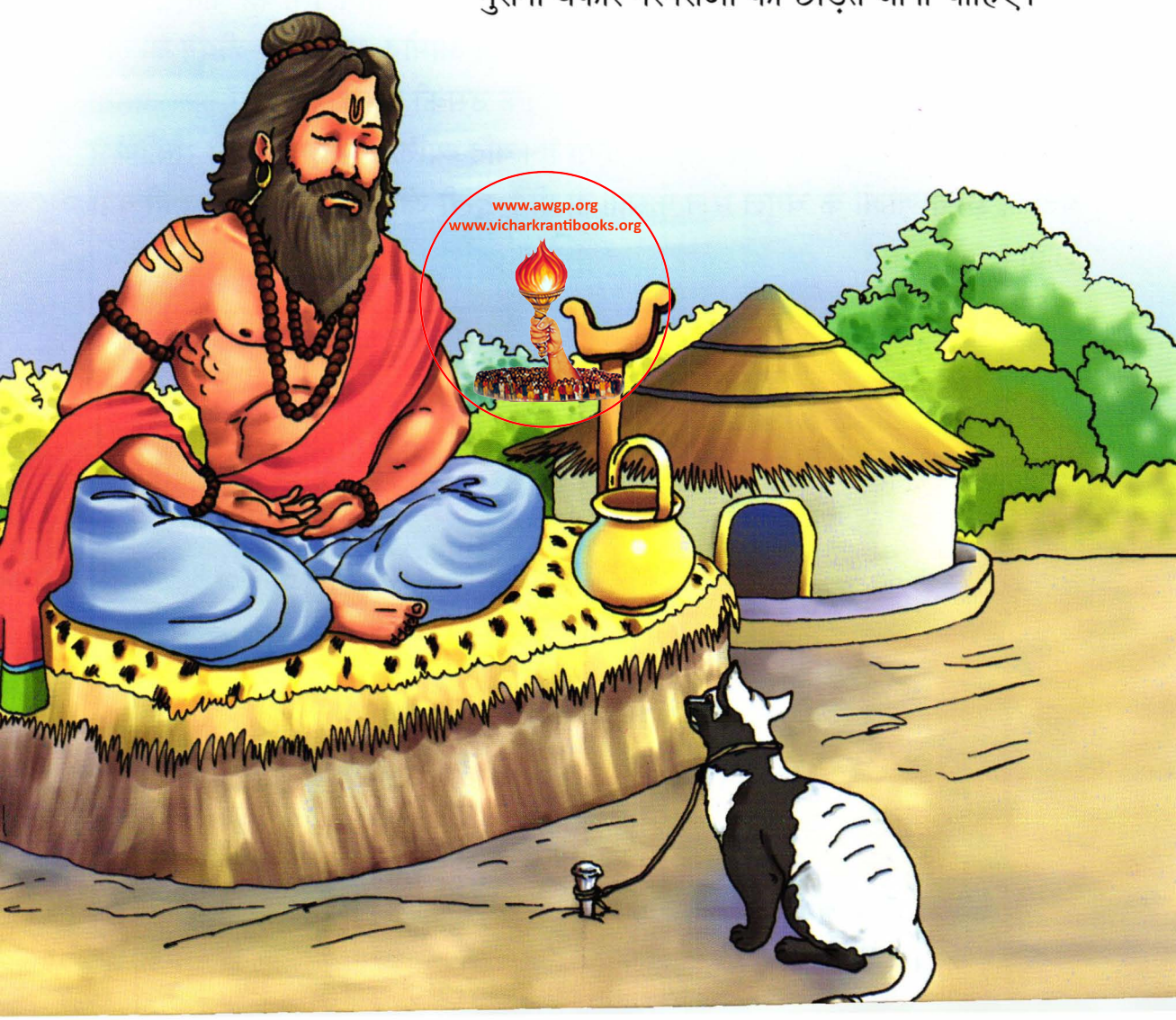

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु की शिक्षा

गुरु ने शिष्य को एक साथ दो ध्यान करने का निर्देश दिया—एक गणेश का, दूसरा कुबेर का। शिष्य ने बहुत प्रयत्न किया पर दोनों एक साथ न बन पड़ते। जब एक की छवि ध्यान में आती दूसरी ध्यान में आती न थी। असफलता की स्थिति उसने गुरु को कह सुनाई। गुरु मुस्कराए और बोले—"स्वार्थ और परमार्थ दोनों एक साथ नहीं सधते हैं। संसार और भगवान में से एक ही हाथ लगता है। सांसारिक बातों में उलझकर भगवान को याद नहीं किया जा सकता।"

गुरु ने इतना बड़ा सिद्धांत बड़ी ही सरल विधि से शिष्य को समझा दिया था।

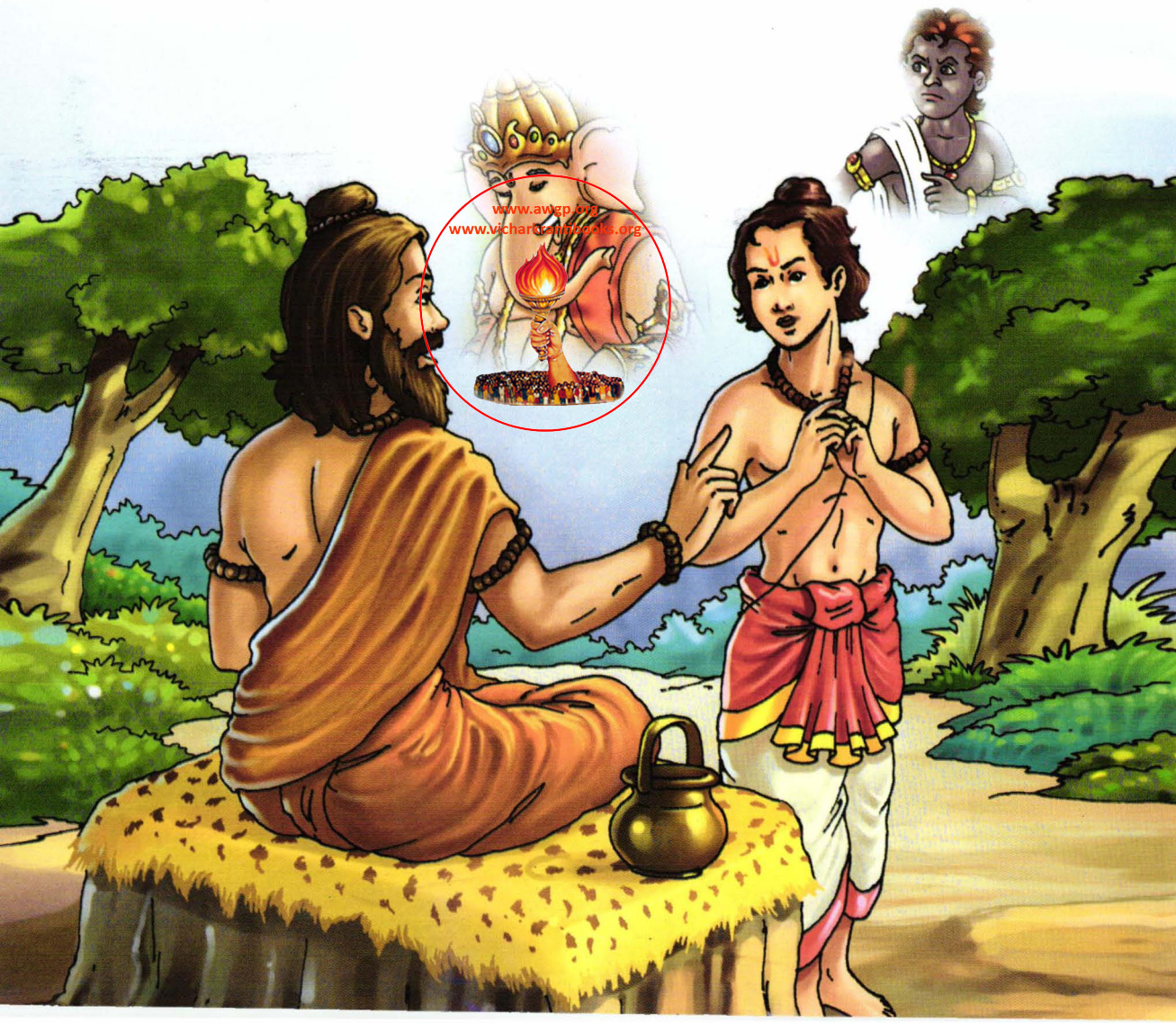

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वायु और आँधी

एक दिन आँधी और उसकी छोटी बहन मंदवायु दोनों आपस में बातें करने लगीं। ''क्या तुम मेरे समान शक्ति नहीं चाहतीं ?''—यह कहकर आँधी मंदवायु की ओर देखने लगी। कुछ उत्तर न पाकर वह फिर कहने लगी—''देखो, जिस समय मैं उठती हूँ, उस समय दूर-दूर तक लोग तूफान के चिह्नों से मेरे आने का समाचार चारों ओर फैला देते हैं। समुद्र के जल के साथ ऐसा खेल करती हूँ कि पानी की लहरों को पर्वत के समान ऊपर उछाल देती हूँ। मुझे देखकर मनुष्य अपने घरों में घुस जाते हैं, पशु-पक्षी अपनी जान बचाकर भागते-फिरते हैं। कमजोर मकानों के छप्परों को भी उड़ाकर फेंक देती हूँ; मजबूत मकानों को पकड़ कर हिला देती हूँ। मेरी सांस से राष्ट्र के राष्ट्र धूल में मिल जाते हैं। क्या तुम नहीं चाहतीं कि तुममें भी मेरे समान शक्ति आ जाए ?''

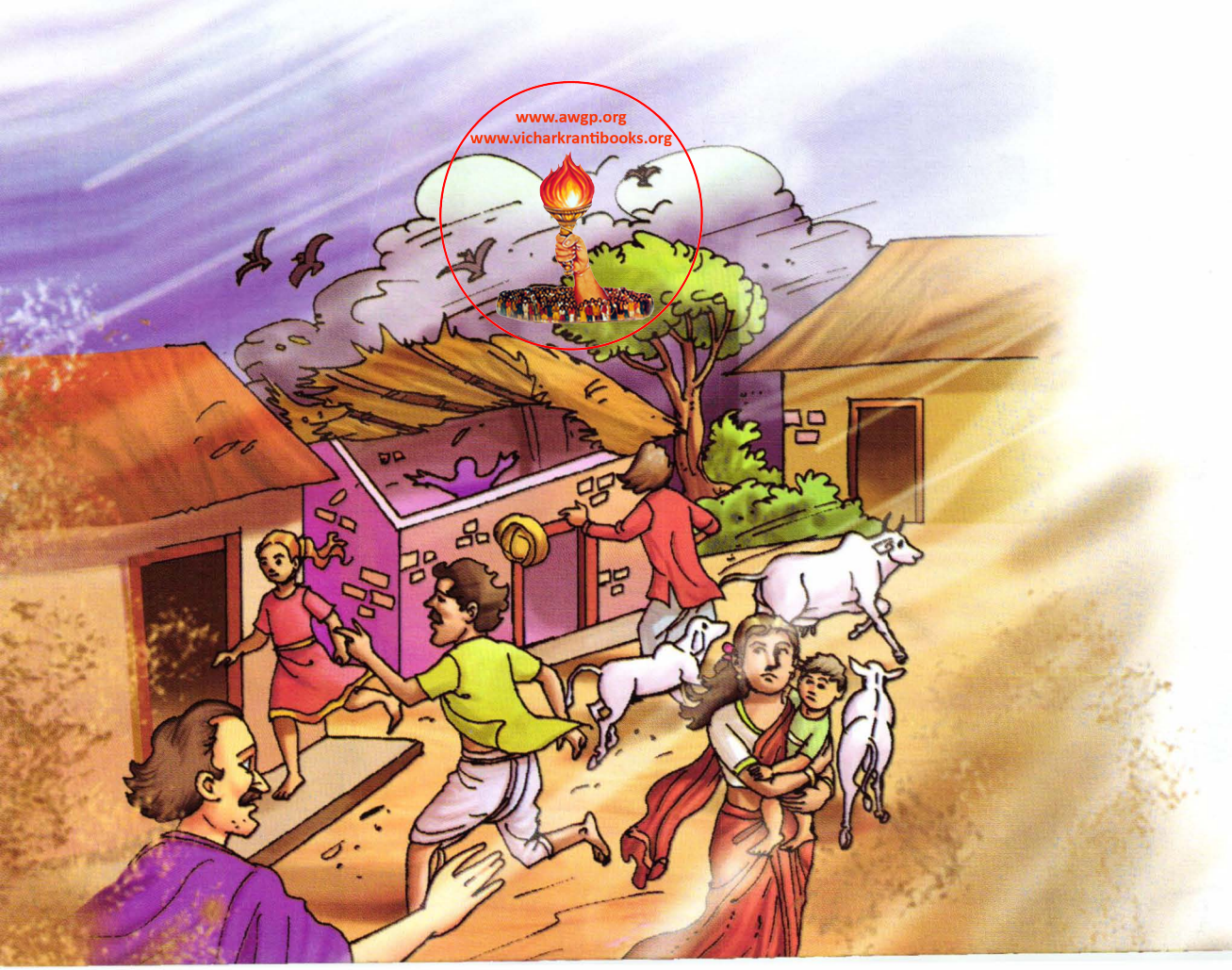

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह सुनकर वसंत की मंदवायु ने कुछ उत्तर न दिया और अपनी यात्रा को चल पड़ी। उसको आते देखकर नदियाँ, ताल, जंगल, खेत सभी मुस्कराने लगे। बगीचों में तरह-तरह के फूल खिल उठे। रंग-बिरंगे फूलों के गलीचे बिछ गए। सुंगधि से चारों ओर का वातावरण भर गया। पक्षीगण कुंजों में आकर विहार करने लगे। सभी का जीवन सुखद हो गया। इस तरह से अपने कार्यों द्वारा वसंत वायु ने अपनी शक्ति का परिचय आँधी को करा दिया। महामानवों का जीवनक्रम भी वसंत की मंदवायु के समान सुरभि-सौंदर्य-प्रसन्नता चारों ओर फैलाने वाला होता है। वे पराक्रम में नहीं, सौजन्य में महानता देखते हैं। इसी कारण वे सब जगह पूजे जाते हैं।

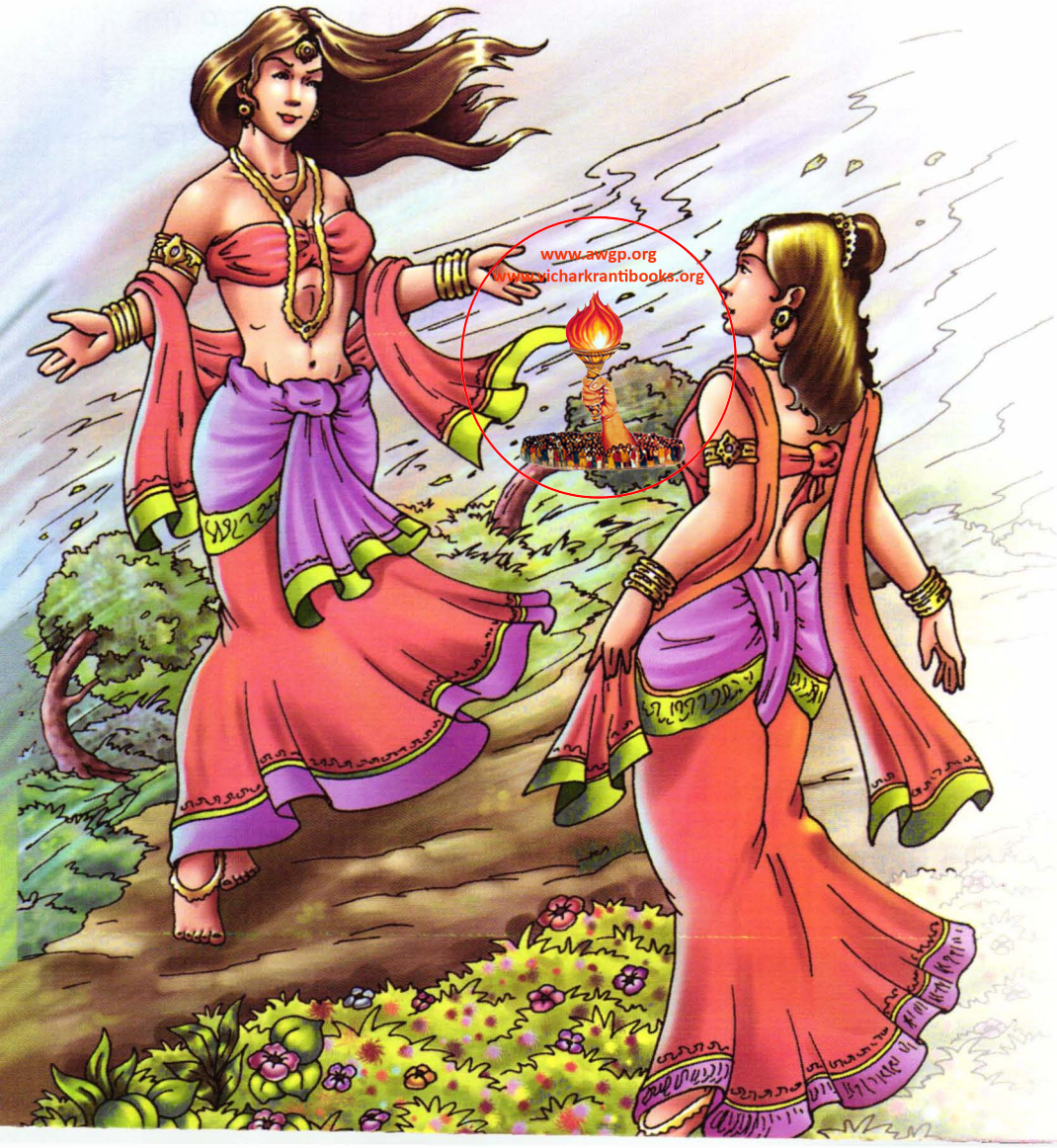

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धूल का घमंड टूटा

हवा जोर से चलने लगी। धरती की धूल उड़-उड़कर आसमान पर छा गई। धरती से उठकर आकाश पर पहुँच जाने पर, धूल को बड़ा गर्व हो गया। वह सहसा कह उठी—"आज मेरे समान कोई भी ऊँचा नहीं। जल, थल, नभ के साथ दशों-दिशाओं में मैं ही मैं व्याप्त हूँ।"

बादल ने धूल की घमंड से भरी बातें सुनी। उसने धूल की भूल पर थोड़ा अट्टहास किया और अपनी पानी की धाराएँ खोल दीं। देखते ही देखते धूल आसमान से उतरकर जमीन पर पानी के साथ बहती दिखलाई देने लगी, दिशाएँ साफ हो गईं। कहीं भी धूल का नाम तक न रहा। पानी के साथ बहती हुई धूल से धरती ने पूछा—"रेणुके! तुमने अपने उत्थान-पतन से क्या सीखा?" धूल ने कहा—"धरती माता! मैंने सीखा कि उन्नति पाकर किसी को गर्व नहीं करना चाहिए।

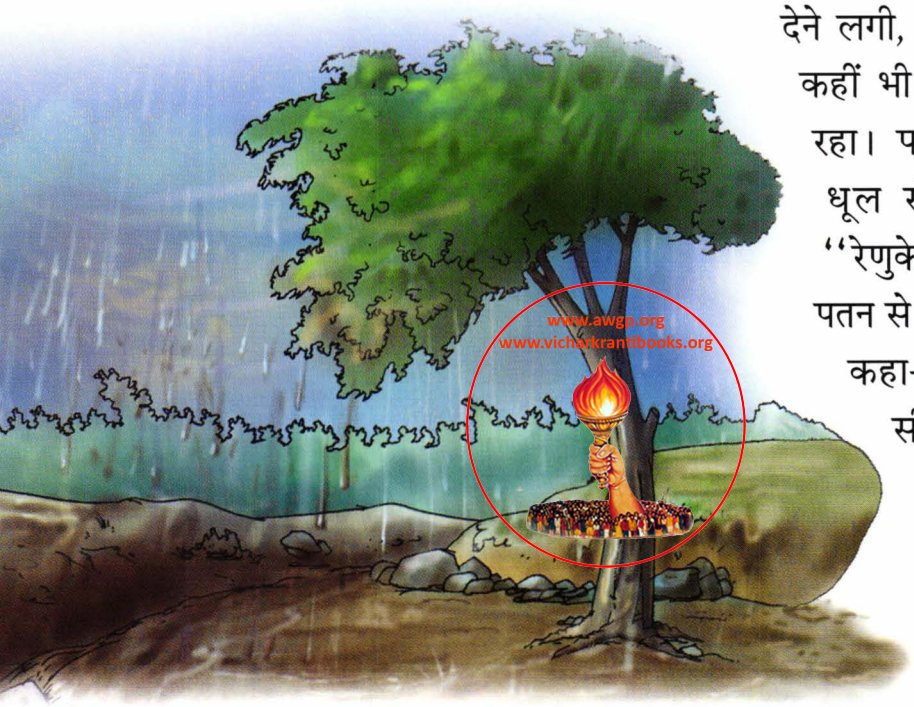
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गर्व करने वाले मनुष्य का पतन अवश्य होता है। अहंकार का मद अधिक देर नहीं टिकता। बहुत शीघ्र ही उसके कुपरिणाम सामने आ जाते हैं।"

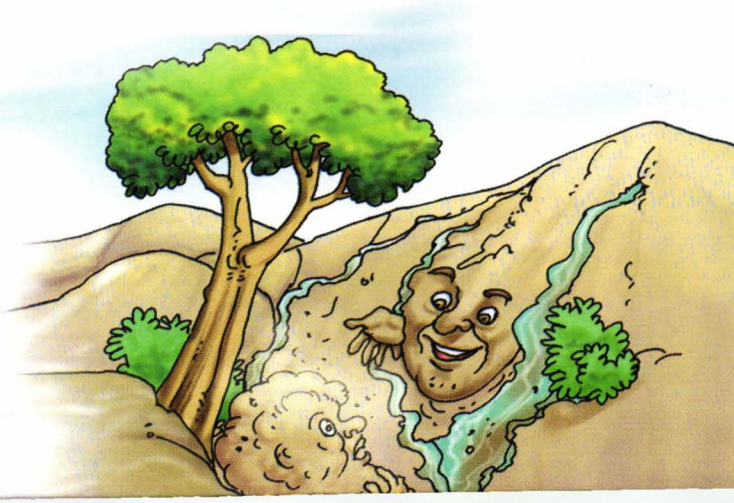

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन की चाह

एक राजा था। वह संसार का सबसे अधिक धनवान व्यक्ति बनने की लालसा रखता था। एक सिद्धपुरुष उसके यहाँ आए। वे जो कहते थे वह सच होता था। राजा के स्वागत से प्रसन्न होकर उन्होंने वर माँगने को कहा।

राजा ने जल्दबाजी में माँग लिया—"जो हाथ से छू लूँ, वह सोना हो जाए।"

वरदान मिल गया। राजा प्रसन्न था कि जिस वस्तु को चाहूँ सोना बना लूँगा। पर उसके भोजन के पदार्थ, पानी आदि सभी हाथ में आते ही सोना बनने लगे। भूख से व्याकुल राजा सोचने लगा, धनवान बनने की जल्दबाजी में मैंने क्या कर डाला।

बेटी को गोद में लिया, बेटी सोने की हो गई। खाना-पानी सब सोने का, क्या खाए क्या पिए ? राजा बहुत पछताया। बहुत अधिक धन पाने की लालसा व्यक्ति को दु:ख देती है। सोच-समझकर किया गया काम ही अच्छा परिणाम देता है।

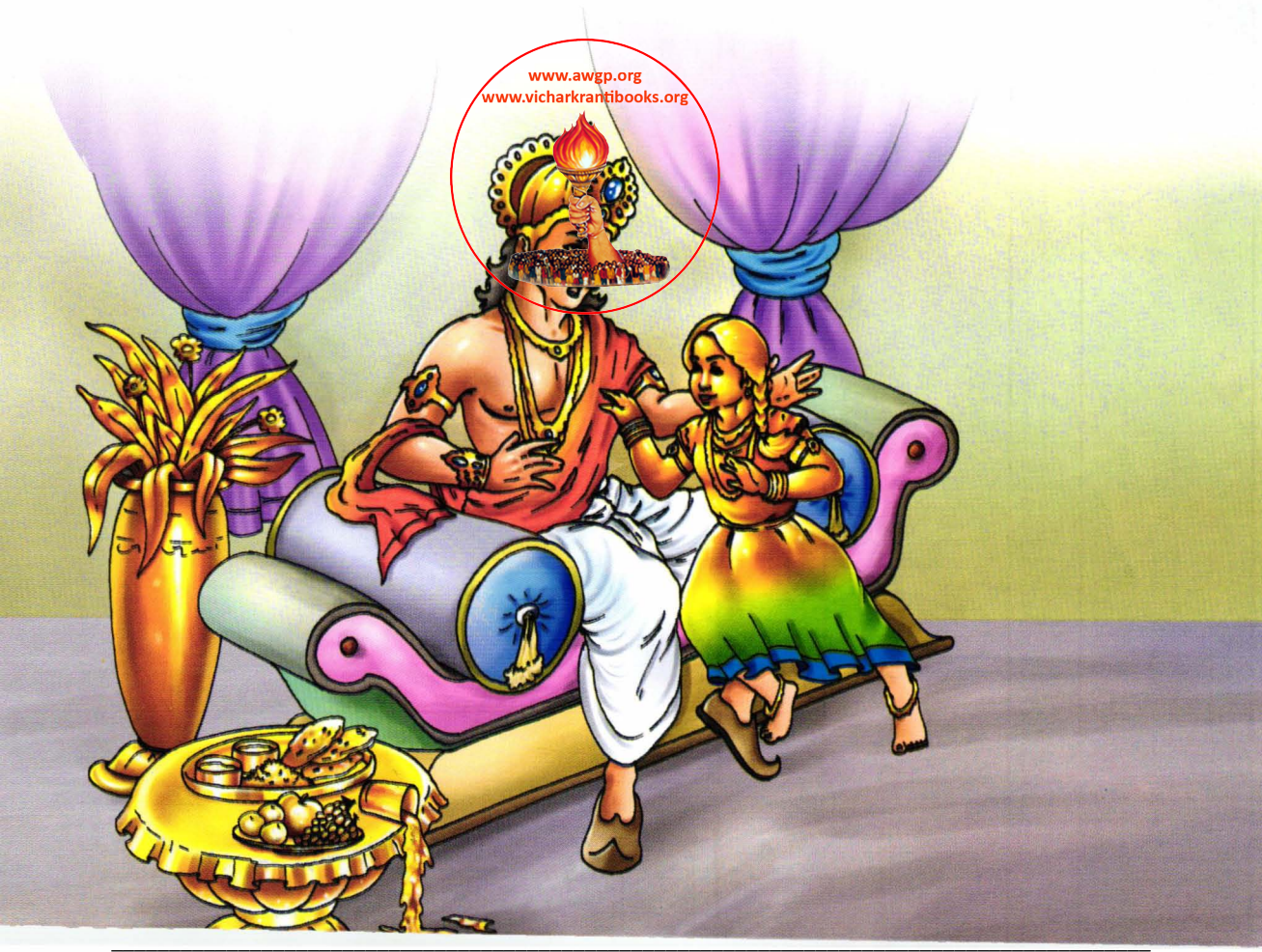

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिष्टाचारी लड़का

एक कुएँ पर चार पनिहारिनें पानी भरने गईं। बारी-बारी से रस्सी में घड़ा बाँधकर कुएँ में उतारतीं और पानी खींचतीं। एक व्यस्त होती, तो तीन खाली रहतीं। इस बीच उनमें कुछ बातचीत शुरू हो गई। सभी अपने-अपने लड़कों के गुणों की प्रशंसा करने लगीं।

एक ने कहा—"मेरे लड़के का गला ऐसा मीठा है कि किसी राजदरबार में उसे मान मिलेगा।" दूसरी ने कहा—"मेरे लड़के ने अपना शरीर ऐसा गठीला बना लिया है कि बड़ा होने पर दंगल में पहलवानों को पछाड़ेगा।" तीसरी ने कहा—"मेरा बेटा ऐसा बुद्धिमान है कि सदा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता है।" चौथी सिर नीचे किए खड़ी थी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसने इतना ही कहा—''मेरा लड़का गाँव के और बच्चों की तरह साधारण ही है।'' इतने में चारों बच्चे स्कूल की छुट्टी होते ही घर चल पड़े। रास्ता कुएँ के पास होकर ही था। एक गाता आ रहा था। दूसरा उछलता। तीसरे के हाथ में खुली पुस्तक थी। सबूत भी उनकी विशेषता का हाथोंहाथ मिल गया। चौथी का लड़का आया, तो उसने चारों स्त्रियों के चरण छूकर प्रणाम किया और अपनी माता का पानी से भरा घड़ा सिर पर लेकर घर की ओर चल पड़ा। कुएँ के पास एक वृद्ध बैठा था। उसने चारों बहुओं को रोककर कहा—''यह चौथा लड़का सबसे अच्छा है। यह बहुत ही शिष्ट है। बड़ों का सम्मान करता है। अपने इस गुण से यह सदा सभी का सहयोग और आशीर्वाद पाएगा। यह जीवन में सदा आगे बढ़ता रहेगा।''

शिष्टाचार व्यक्तित्व को निखारता है, सुंदर भविष्य बनाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले स्वयं तो बदलें

एक सात वर्ष के बालक को माँ पीटे ही जा रही थी। उसे पड़ोस की एक महिला ने जाकर बचाया। पूछने पर उसकी माँ ने बताया कि वह मंदिर में से चढ़ौती के आम तथा पैसे चुराकर लाया है, इसी से पीट रही हूँ। उस महिला ने बड़े प्यार से उस बच्चे से पूछा—"क्यों बेटा! तुम तो बड़े प्यारे बालक हो। चोरी तो गंदे बालक करते हैं। तुमने ऐसा क्यों किया?" बार-बार पूछने पर सिसकियों के बीच से वह बोला—"माँ भी तो रोज ऊपर वाले चाचाजी के दूध में से आधा निकाल लेती हैं और हमसे कहती हैं कि बताना मत। मैंने तो आज पहली बार ही चोरी की है।"

महिला का मुख देखते ही बनता था उस समय।

वास्तव में बच्चों के निर्माण में घर का वातावरण बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यदि चरित्रवान संतान चाहते हैं, तो सबसे पहले अपने व्यवहार को भी ठीक करना चाहिए। माता-पिता की कथनी-करनी एक ही हो, यह बहुत जरूरी है, क्योंकि कच्चे मन पर वही संस्कार पड़ते हैं, जो बालक अपने आस-पास के वातावरण में देखता है। माता-पिता का अच्छा व्यवहार बालक को भी अच्छा बनाता है।

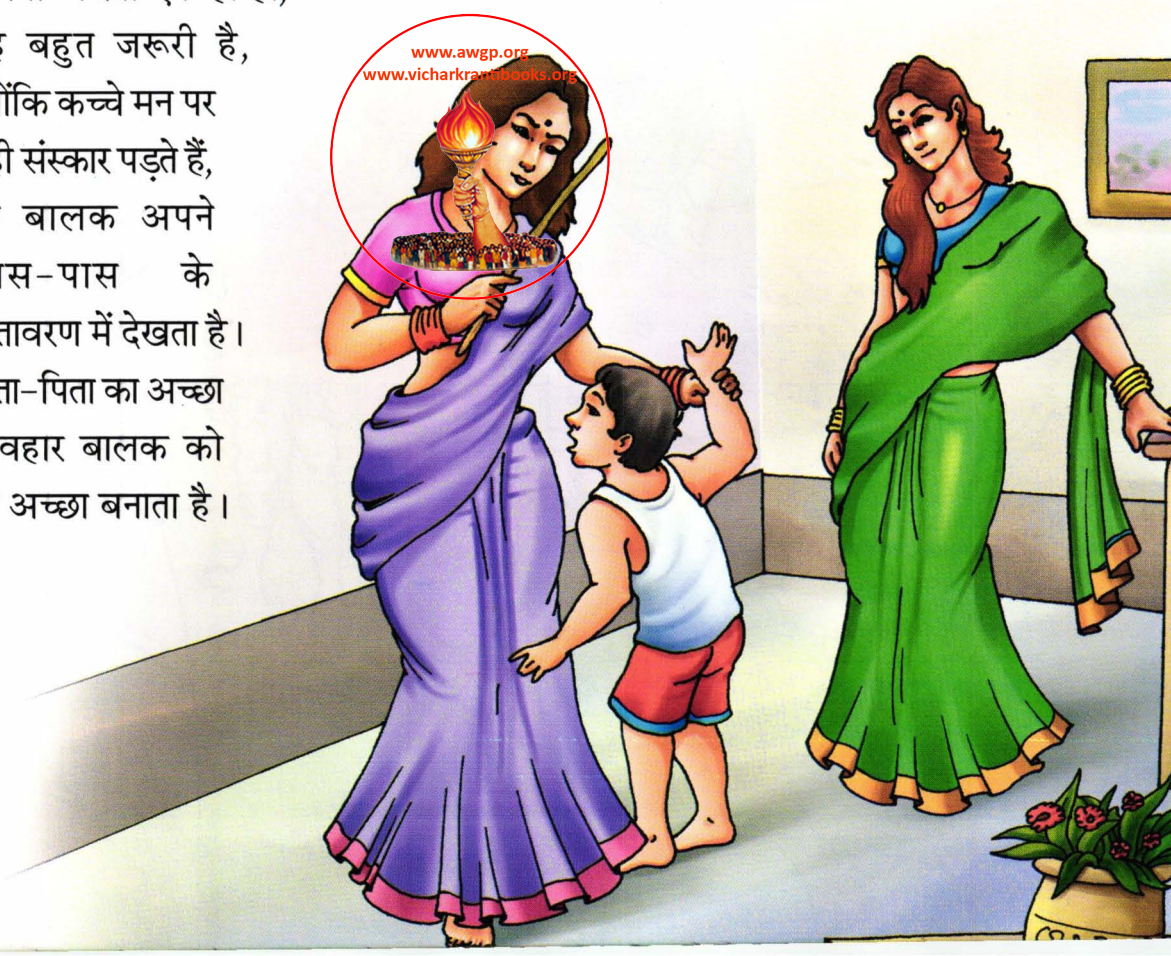

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच्चों को उड़ना सिखाया

एक गरुड़ ने अपने छोटे बच्चों को पीठ पर बिठाया फिर उन्हें अपने साथ दूसरे सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। वे दोनों दिनभर दाना चुगते रहे, सायंकाल घर लौटे। यह क्रम बहुत दिन चला। कुछ दिनों बाद बच्चे बड़े हुए तो गरुड़ बोला—"बच्चो, अब तुम बड़े हो गए हो, अपने पंखों से स्वयं उड़ने की कोशिश करो।"

पर बच्चों ने उसकी बात पर ध्यान न दिया। वे आपस में चुपचाप से बातें करने लगे—"पिता जी हमें पीठ पर बिठाकर सुरक्षा से ले ही जाते हैं। हम क्यों बेकार मेहनत करें?" गरुड़ बच्चों की इस दुर्बलता को बड़ी सावधानी से देखता रहा। एक दिन जब वे आकाश में उड़ रहे थे, तब धीरे से गरुड़ ने अपने पंख खींच लिए। बच्चे गिरने लगे। जब चेत आई तो पंख फड़फड़ाए। वे गिरते-गिरते बचे। पर अब उन्होंने उड़ना सीखने की आवश्यकता अनुभव कर ली।

सायंकाल बालकों ने माँ से कहा—"माँ, आज पंख न फड़फड़ाए होते, तो पिताजी ने बीच में ही मार दिया होता।" बच्चों की माँ हँसकर बोली—"बेटे! जो अपने आप नहीं सीखते, स्वावलंबी नहीं बनते, उन्हें सिखाने-समझाने का यही नियम है। बच्चों को माता-पिता का सहारा छोड़कर धीरे-धीरे अपने काम स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए। इसी में उनकी भलाई है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामिभक्ति

एक राजा के चार मंत्री थे। उनमें से तीन तो थे चापलूस। चौथा था दूरदर्शी, विवेकवान और साफ बोलने वाला।

राजा मरा तो पहले मंत्री ने बहुमूल्य पत्थरों का स्मारक बनवाया। दूसरे ने उसमें मणि मुक्ता जड़वाए। तीसरे ने सोने के दीपक जलवाए। सभी ने उनकी स्वामिभक्ति की सराहना की, प्रशंसा की। चौथे मंत्री ने उस स्मारक के आस-पास घना बगीचा लगवा दिया। पहले तीनों मंत्रियों की राशि बेकार चली गई। चोर चुरा ले गए। पर चौथे का बगीचा फल देता रहा। मालियों के कुटुंब पलते रहे। जब राहगीर वहाँ आते तो उन्हें छाया में विश्राम करने का स्थान मिलता। माली उन्हें फल खिलाते, जल पिलाते। यात्री बगीचे को बनाने वाले के विषय में पूछते। पूरी बात जानकर वे मंत्री की दूरदर्शिता और स्वामिभक्ति की सराहना करते।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वृक्षों को लगाना बहुत बड़ा पुण्य है। वे हमें फल, छाया और लकड़ी तो देते ही हैं, वायुमंडल को भी शुद्ध करते हैं। इसीलिए हमारे धर्मग्रंथों में वृक्ष लगाने को पुण्य माना गया है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मित्र किसी काम न आए

एक खरगोश बहुत भला था। उसने बहुत से जानवरों से मित्रता की और आशा की कि वक्त पड़ने पर मेरे काम आवेंगे। एक दिन शिकारी कुत्तों ने उसका पीछा किया। वह दौड़ा हुआ गाय के पास पहुँचा और कहा—"आप हमारी मित्र हैं, कृपा कर अपने पैने सींगों से इन कुत्तों को मार दीजिए।"

गाय ने उपेक्षा से कहा—"मेरा घर जाने का समय हो गया। बच्चे इंतजार कर रहे होंगे, अब मैं ठहर नहीं सकती।" तब वह घोड़े के पास पहुँचा और कहा—"मित्र घोड़े! मुझे अपनी पीठ पर बिठाकर इन कुत्तों से बचा लो।"

घोड़े ने कहा—"मैं बैठना भूल गया हूँ, तुम मेरी ऊँची पीठ पर चढ़ कैसे पाओगे?"

अब वह गधे के पास पहुँचा और कहा—"भाई! मैं मुसीबत में हूँ, तुम दुलत्ती झाड़ने में प्रसिद्ध हो, इन कुत्तों को लातें मारकर भगा दो।" गधे ने कहा—"घर पहुँचने में देरी हो जाने से मेरा मालिक मुझे मारेगा। अब तो मैं घर जा रहा हूँ। यह काम किसी फुरसत के वक्त कर लेना।" अब वह बकरी के पास पहुँचा और उससे भी प्रार्थना की। बकरी ने कहा—"जल्दी भाग यहाँ से, मैं भी मुसीबत में फँस जाऊँगी।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तब खरगोश ने समझा कि दूसरों का आसरा तकने से नहीं, अपने बलबूते से ही अपनी मुसीबत पार होती है। तब वह पूरी तेजी से दौड़ा और एक घनी झाड़ी में छिपकर अपने प्राण बचाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चमत्कार

महात्मा ईसा अपने शिष्यों सहित कहीं जा रहे थे। रात्रि में एक जगह ठहरे। शिष्यों ने भूख लगने पर थैली देखी तो पास में केवल पाँच रोटियाँ थीं। इतने से सबका पेट कैसे भरेगा, यह प्रश्न सामने था।

यह समस्या ईसा ने सुनी तो कहा—"सारी रोटियाँ एक पात्र में टुकड़े-टुकड़े करके डाल दो। सभी लोग एक-एक टुकड़ा निकाल-निकाल कर खाते जाएँ। सबको समान रूप से भोजन मिल जाएगा।" सबने श्रद्धापूर्वक गुरु की आज्ञा मानी। सोचा सबके पेट में समान रूप से अन्न पहुँचे, वही ठीक है। भोजन समाप्त हुआ तो सबका पेट भर गया।

शिष्य बोले—"यह गुरुदेव का चमत्कार है।" पर ईसा बोले—"यह तुम्हारे सद्भाव भरे सहकार का चमत्कार है। तुम स्वार्थ भरी छीना-झपटी करते तो यह संभव न होता। जहाँ सद्भाव भरा पारिवारिक सहकार होता है, वहाँ प्रभु का सहयोग बिना माँगे ही मिलता है।"

स्नेह, सद्भावना और सहकार से भरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यापारी की चतुरता

एक व्यापारी था। एक बार उसने अपने देवता के सामने मनौती मनायी कि अबकी बार जो लाभ होगा, उसमें से आधा लाभ आपको दूँगा। देवता ने साझीदारी स्वीकार कर ली। चतुर व्यापारी ने नारियल, बादाम, अखरोट जैसी मेवा खरीदी और उनके छिलके वाला भाग देवता के सम्मुख चढ़ा दिया। बीज अपने लिए रख लिए।

देवता हँसे, कहा—"जा, जैसी साझेदारी तूने मुझसे की है, तुझे वैसे ही साझेदार मिलते रहेंगे।" अपने को चतुर समझने वाला व्यापारी सिर पकड़कर बैठ गया। देवता उसे यह कैसा वरदान दे गए! अब उसे पछतावा हुआ कि उसने अपने देवता से छल क्यों किया? उसने प्रतिज्ञा की कि अब वह किसी के साथ छल-कपट भरा व्यवहार नहीं करेगा।

अपनी आत्मा और देवता के प्रति सदा सच्चा और निष्कपट रहना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नकल के लिए अक्ल

एक गाँव में दो युवक रहते थे। दोनों में बड़ी दोस्ती थी। जहाँ जाते साथ-साथ जाते। एक बार दोनों एक धनी व्यक्ति के साथ उसकी ससुराल गए। किसी धनी व्यक्ति के साथ रहने का यह पहला अवसर था। सो, वे धनी मित्र के प्रत्येक कार्य को ध्यान से देखते रहे।

गरमियों के दिन थे। रात में उनके मित्र के लिए सोने की व्यवस्था खुले स्थान पर की गई। काफी ठंढक बनी रहे, उसके लिए वहाँ चारों ओर जल छिड़का गया। रात को ओढ़ने के लिए बहुत हलकी मलमल की चादर दी गई।

अन्य दोनों युवकों ने इतना ही जाना कि इस तरह का रहन-सहन बड़प्पन की बात है। कुछ दिनों बाद उन्हें भी अपनी-अपनी ससुराल जाने का अवसर मिला। पर उन दिनों बहुत ठंढ पड़ रही थी, जाड़े के दिन थे। नकल तो नकल ही है। दोनों ने अपना बड़प्पन जताने के लिए बिस्तर खुले आकाश के नीचे लगवाया और ओढ़ने के लिए कुल एक-एक चादर, वह भी पतली ली।

रात में पाला पड़ गया। सो, दोनों को निमोनियाँ हो गया। चिकित्सा कराई गई, तब कठिनाई से जान बची।

उचित और अनुचित का विचार किए बिना, जो औरों की नकल करता है, वह मूर्ख संकट में ही पड़ता है, जैसे वे दोनों युवक।

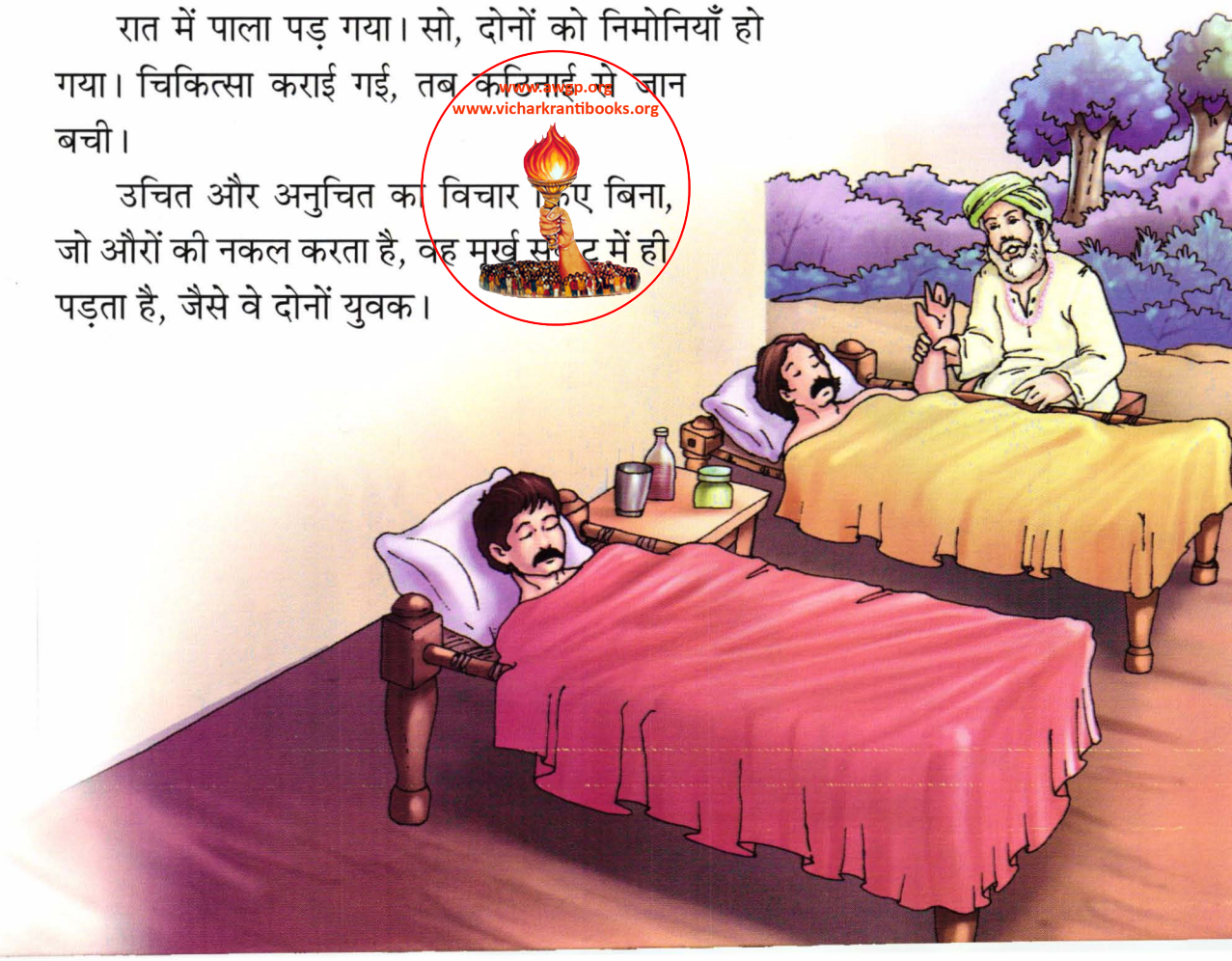

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कंजूसी किस काम की ?

एक महात्मा ने किसी भक्त की सेवा भावना से प्रसन्न होकर उसे सात दिन के लिए पारसमणि पत्थर देकर कहा—''इससे छूने से लोहा सोना हो जाता है। जितने सोने की जरूरत हो, बना लो। सात दिन बाद वह वापस ले ली जाएगी।''

भक्त बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब मेरी सारी गरीबी दूर हो जाएगी। पर वह था बड़ा कंजूस। सस्ता और बहुत सारा लोहा ढूँढ़ने में लग गया। जिस दुकान पर वह गया वहाँ उसकी समझ में लोहा थोड़ा था और महँगा भी बहुत था। सस्ता और बहुत बड़ा ढेर ढूँढ़ने के लालच में वह कई नगरों में गया पर उसे कहीं संतोष न हुआ। इसी भाग-दौड़ में सात दिन पूरे हो गए क्योंकि पारसमणि तो केवल सात दिन के लिए ही दी गई थी। मणि वापस ले ली गई और वह रत्तीभर भी सोना प्राप्त न कर सका।

अधिक सयाने बनने वाले और अधिक कंजूस सदा घाटे में रहते हैं।

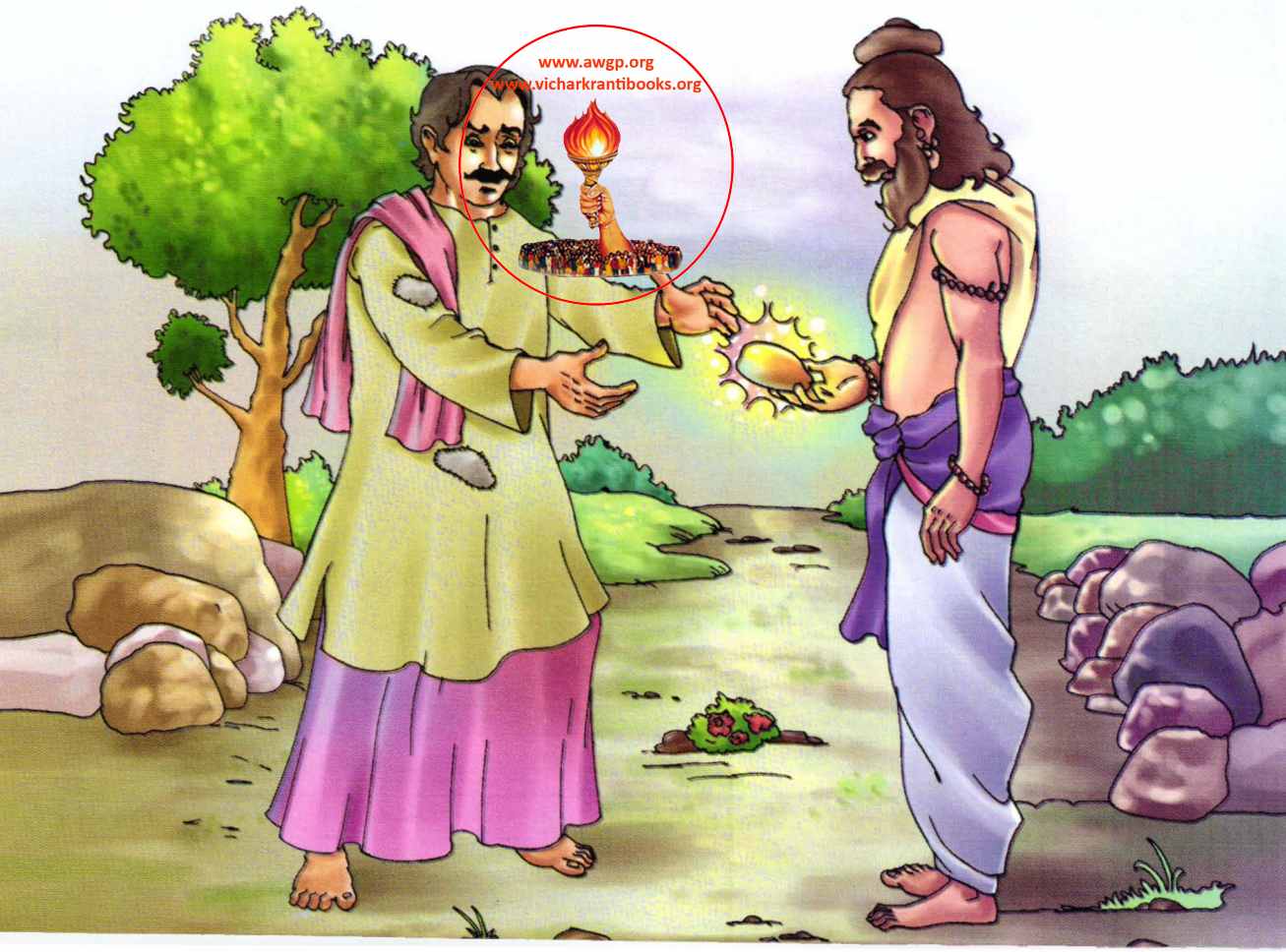

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शेर और सियार

एक शेर ने कुछ सियारों के सहयोग से एक बारहसिंगा को मारा। मांस के बटवारे का निपटारा सिंह को ही करना था। सिंह ने शिकार के टुकड़े किए। कहा—''एक टुकड़ा राजकोष में कर जमा करना होता है और दूसरा टुकड़ा अधिक मेहनत के कारण मेरा ही होता है। तीसरा स्वयंवर जीतने पर मिलेगा, उसे पाने के लिए जो सामने आना चाहे, सो संघर्ष के लिए तैयार हो।'' सियार चुपचाप खिसक गए। सिंह ने पूरा बारहसिंगा खा डाला। शिक्षा यही है कि धूर्त के साथ सहयोग भी हितकारी नहीं होता। जहाँ तक हो, उससे बचना ही चाहिए।

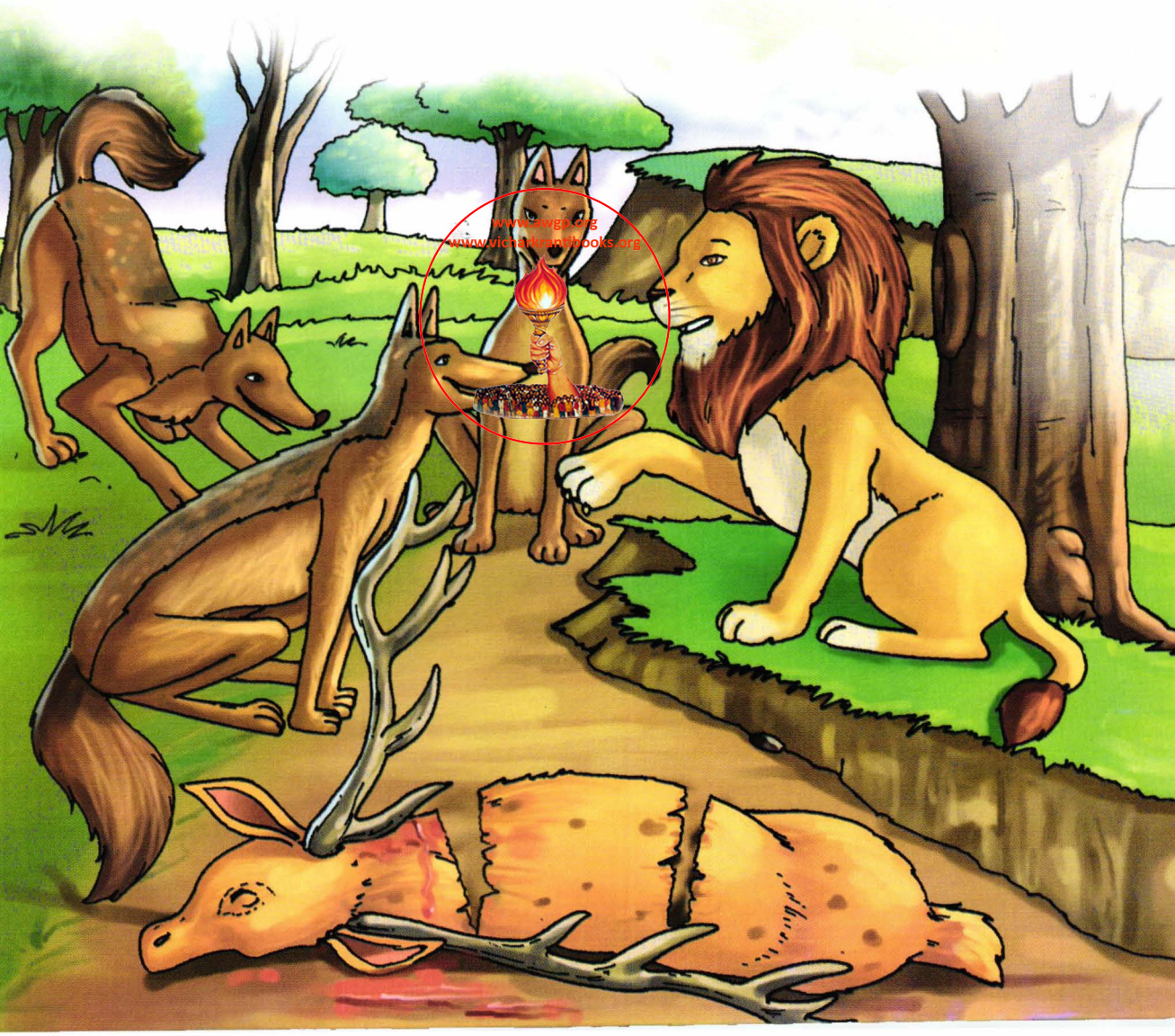

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने पैर सिकोड़िए

एक बार अकबर और वीरबल दोनों दरबार में बैठे थे। अकबर ने दरबारियों की बुद्धि परखने के लिए एक चादर मँगायी, जो उनकी लंबाई से छोटी थी। सभी से ऐसा प्रश्न पूछा जा रहा था कि बिना चादर को घटाए-बढ़ाए उनका शरीर कैसे ढँक जाए? औरों से उत्तर न बन पड़ा तो वीरबल ने कहा—"हुजूर! अपने पैर सिकोड़ें, मजे में उसी चादर में तन ढँककर सोएँ।"

बुद्धिमानी की बात सभी को पसंद आई। यदि आमदनी कम हो जाए तो व्यक्ति को चाहिए कि अपनी आवश्यकताओं को कम कर ले। यही बुद्धिमानी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंधे का दीपक

विधाता ने जय-विजय को धरती पर यह तलाश करने के लिए भेजा कि उस वर्ष किसे सम्मानपूर्वक स्वर्ग में प्रवेश दिया जाए। दोनों दूत सर्वत्र घूमते फिरे और सज्जनों, भक्तजनों का लेखा-जोखा नोट करते रहे। इस बीच उन्होंने एक अंधा वृद्धजन देखा, जो रास्ते के किनारे दीपक जलाए बैठा था। देवदूतों ने पूछा—"वृद्ध! घर से दूर, आँखें न होते हुए भी दीपक जलाना और रात भर जागना, कुछ समझ में नहीं आता।" वृद्ध ने कहा—"जो किया जाए, वह अपने लिए हो, यह क्या जरूरी है? संसार के सब लोग भी तो अपने ही हैं। रात्रि को निकलने वालों को ठोकर लगने से बचाकर मुझे संतोष और आनंद मिलता है। स्वार्थरत रहने की तुलना में यह लाभ क्या कम है?" देवदूत सब कुछ देखकर वापस लौटे और सारे विवरण सुनाए, तो सर्वश्रेष्ठ वह अंधा ही निकला। देवता अपने कंधों पर पालकी से उसे स्वर्ग लाए और पुण्यात्माओं में सबसे बड़े व्यक्ति को दिए जाने वाले स्थान पर उसे रखा गया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घमंडी अजगर

एक अजगर को अपने आकार और पराक्रम पर बड़ा अभिमान था। वह यह भी सोचता था कि जिसे भी अपनी पकड़ में जकड़ लेगा, उसका कचूमर निकालकर ही छोड़ेगा। मंदिर की चौखट पर जड़ा हुआ संगमरमर का शेर उसने देखा, तो गुस्से में आग बबूला हो गया। मुझे देखकर बड़े-बड़े जानवर डरकर भागते हैं, एक तू है, जो जहाँ का तहाँ बैठा अकड़ रहा है। सिंह तो पत्थर का था कुछ बोल नहीं सकता था, सो बोला भी नहीं। अजगर उससे लिपट गया और निगलने लगा। उसकी मेहनत बेकार गई। जितना-जितना वह क्रुद्ध होता और आक्रमण करता, उतनी ही चोट उसे लगती और लहूलुहान होता जाता। अंत में उसे अपनी मूर्खता समझ में आई और लहूलुहान शरीर लेकर बिल में वापस लौट गया। क्रोध में आकर बल दिखाने वालों की ऐसी ही हालत होती है जैसी इस अजगर की हुई।

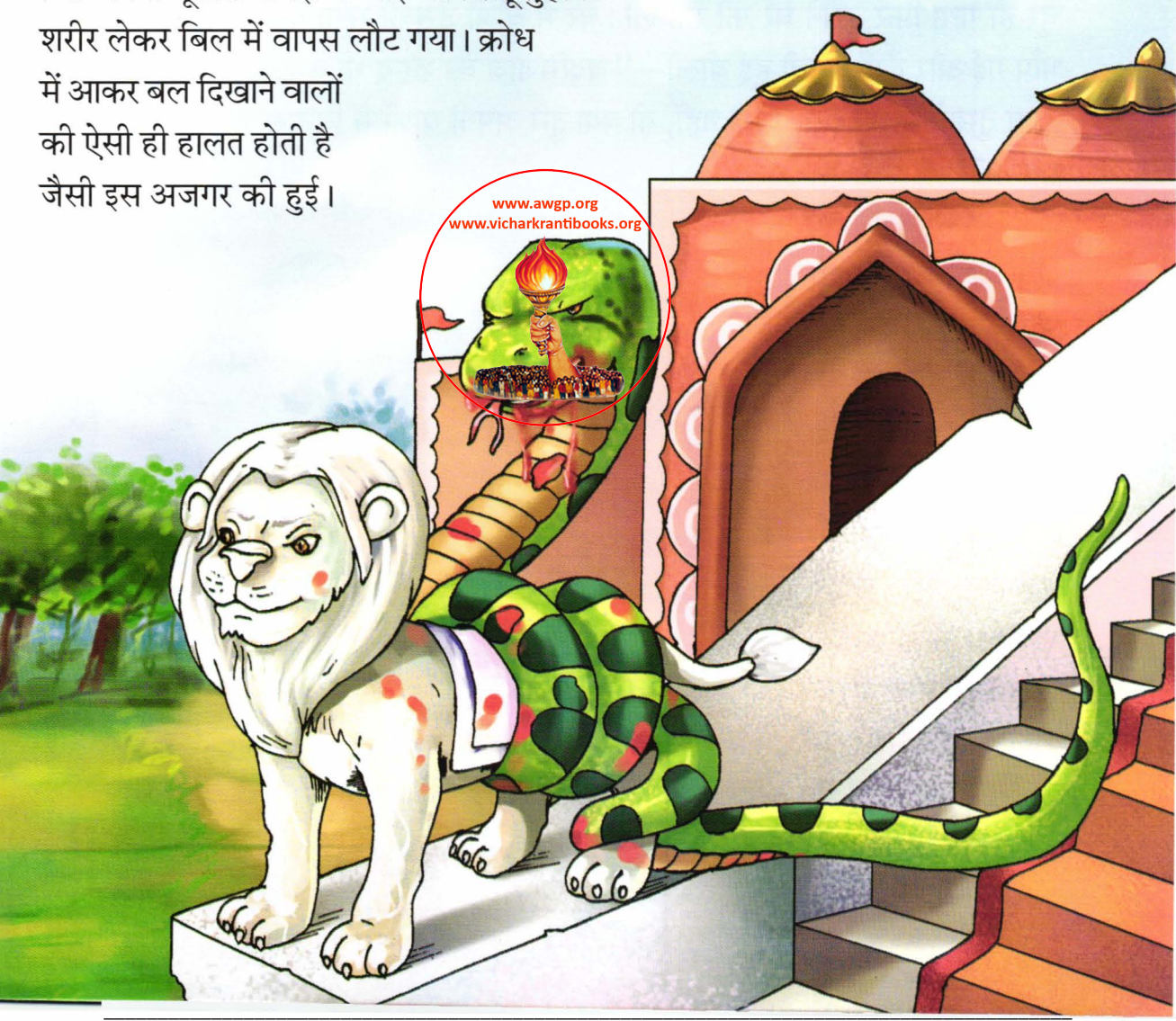

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाणी की मिठास

एक छैल-छबीला आदमी शहद बेचा करता था। उसकी वाणी में इतनी मिठास थी, कि शहद खरीदने वाले उसके पास इकट्ठा हो जाते। एक बदमिजाज आदमी ने उसे देखा और उससे जलने लगा। उसने सोचा, क्यों न मैं भी यही धंधा कर लूँ। दूसरे दिन वह भी शहद का मटका सिर पर रखकर घर से निकल पड़ा। आदत के अनुसार माथे पर बल पड़े हुए थे। वह ध्यान से दरवाजों की ओर देखता कि शायद कोई मुझे ही पुकार रहा है, पर ज्यों ही उसकी नजर किसी औरत या मर्द से टकरा जाती, उसे देखने वाला मुँह फेर लेता।

शहद बेचने वाला परेशान था। वह दिनभर चिल्ला-चिल्लाकर आवाजें देता रहा—"शहद ले लो शहद!" उसकी आवाज इतनी तीखी थी कि सुनने वालों के दिल में घृणा पैदा कर रही थी। सारा दिन शहद का मटका लिए-लिए भटकता रहा। आखिर थक कर चूर हो गया फिर उसने घर की राह ली। घर में बीबी उसकी सूरत देखकर सारा किस्सा भाँप गई और हँसी करती हुई बोली—"बदमिजाज का शहद भी कड़वा होता है, मियाँ! अगर तुम्हारे पास सोना-चाँदी नहीं, तो क्या तुम अपनी वाणी में मिठास भी पैदा नहीं कर सकते?"

व्यक्ति-व्यक्ति में पाया जाने वाला यह अंतर उसके मन के भाव और संस्कारों के कारण होता है। यदि व्यक्ति मन से निश्चय कर ले तो उसका स्वभाव भी बदल सकता है। अच्छे स्वभाव और मीठी बोली से ही कोई दूसरों का प्यार पा सकता है।

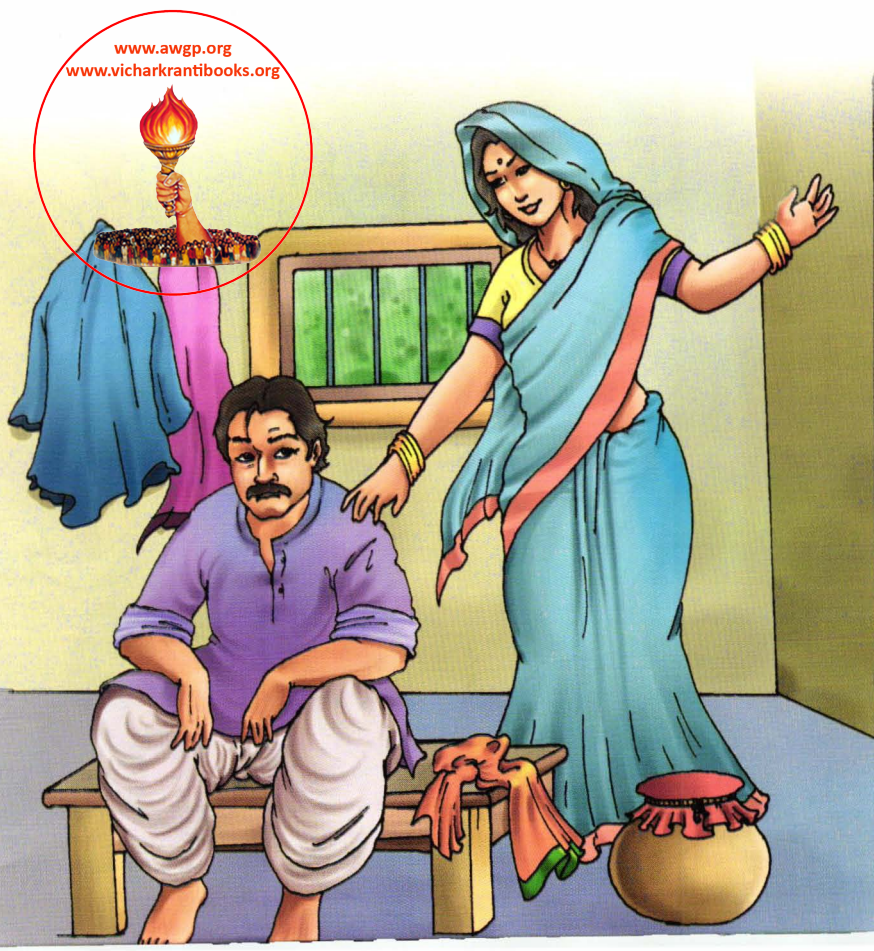

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तप का प्रतिफल

एक वृक्ष ने राह चलते व्यक्ति से कहा—''तुम जितनी बार पत्थर मारोगे, उतनी ही बार उपहार में मैं फल दूँगा। यह तो मेरा व्रत है। पत्थर का उत्तर पत्थर से देना मुझे नहीं आता, भले ही मुझे चोट लगे, खून निकले।''

उस व्यक्ति ने कुढ़कर कहा—''तुम यों फूलो-फलो और मैं भूखा फिरूँ, क्या यह तुम्हारा और तुम्हारे भगवान का अन्याय नहीं है।''

वृक्ष ने हँसकर कहा—''ईर्ष्या क्यों करते हो पथिक! मेरे पतझड़ के कष्टों को देखते तो पता चलता कि वह फल मैंने कितनी तपश्चर्या से प्राप्त किए हैं। तुम भी वैसा पुरुषार्थ करके देखो।''

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जंगल में जन्मे पौधे तक, जब विशाल वृक्ष बन जाते हैं तो कोई कारण नहीं, मनुष्य जैसे विचारशील प्राणि-जगत में जन्म लेकर कोई उन्नति के लिए औरों का मुँह जोए-राह तके। मेहनत करने वाले अपना रास्ता स्वयं बनाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वयं अपनी राह बनाई

ईश्वरचंद्र विद्यासागर के पिता नौकरी करते थे। उन्हें तीन रुपये मासिक वेतन मिलता था। परिवार बड़ा होने से तीन रुपये मासिक में खरच चलाना मुश्किल था। ऐसी विपन्न स्थिति में बालक ईश्वरचंद्र की पढ़ाई का प्रबंध कैसे हो ? पुत्र की पढ़ने की उमंग और अपनी विवशता को देखकर पिता मन में बहुत दुखी होते थे।

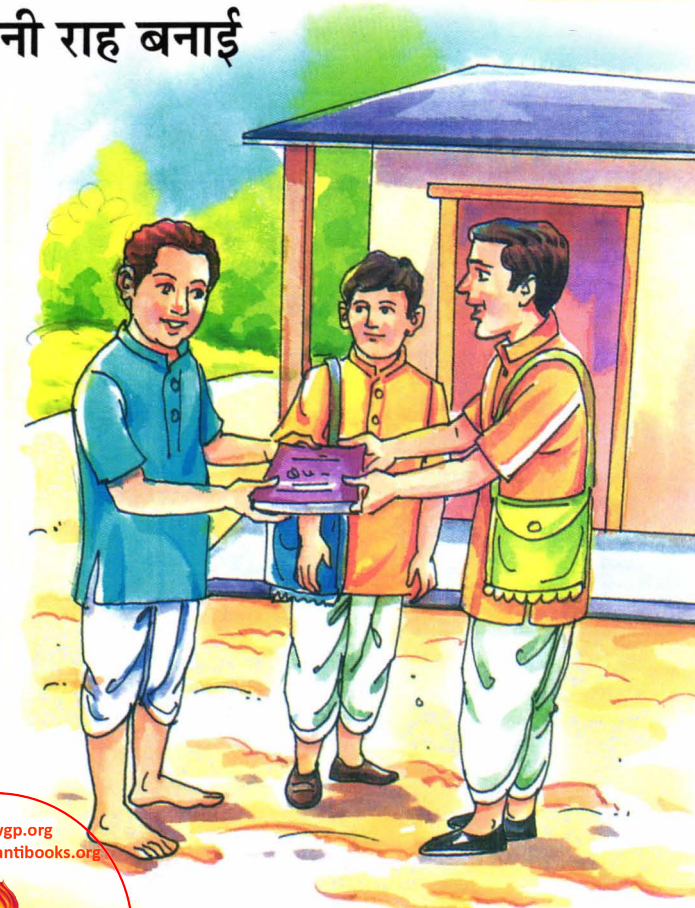

अपने पिता की विवशता देखकर पढ़ाई के लिए ईश्वरचंद्र ने रास्ता निकाल ही लिया। उसने गाँव के उन लड़कों को मित्र बनाया, जो पढ़ने जाते थे। उनकी पुस्तकों के सहारे उसने अक्षरज्ञान कर लिया और एक दिन कोयले से जमीन पर लिखकर अपने पिता को दिखलाया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ईश्वरचंद्र की विद्या के प्रति लगन देखकर पिता ने तंगी का जीवन जीते हुए भी उसे गाँव की पाठशाला में भरती करा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

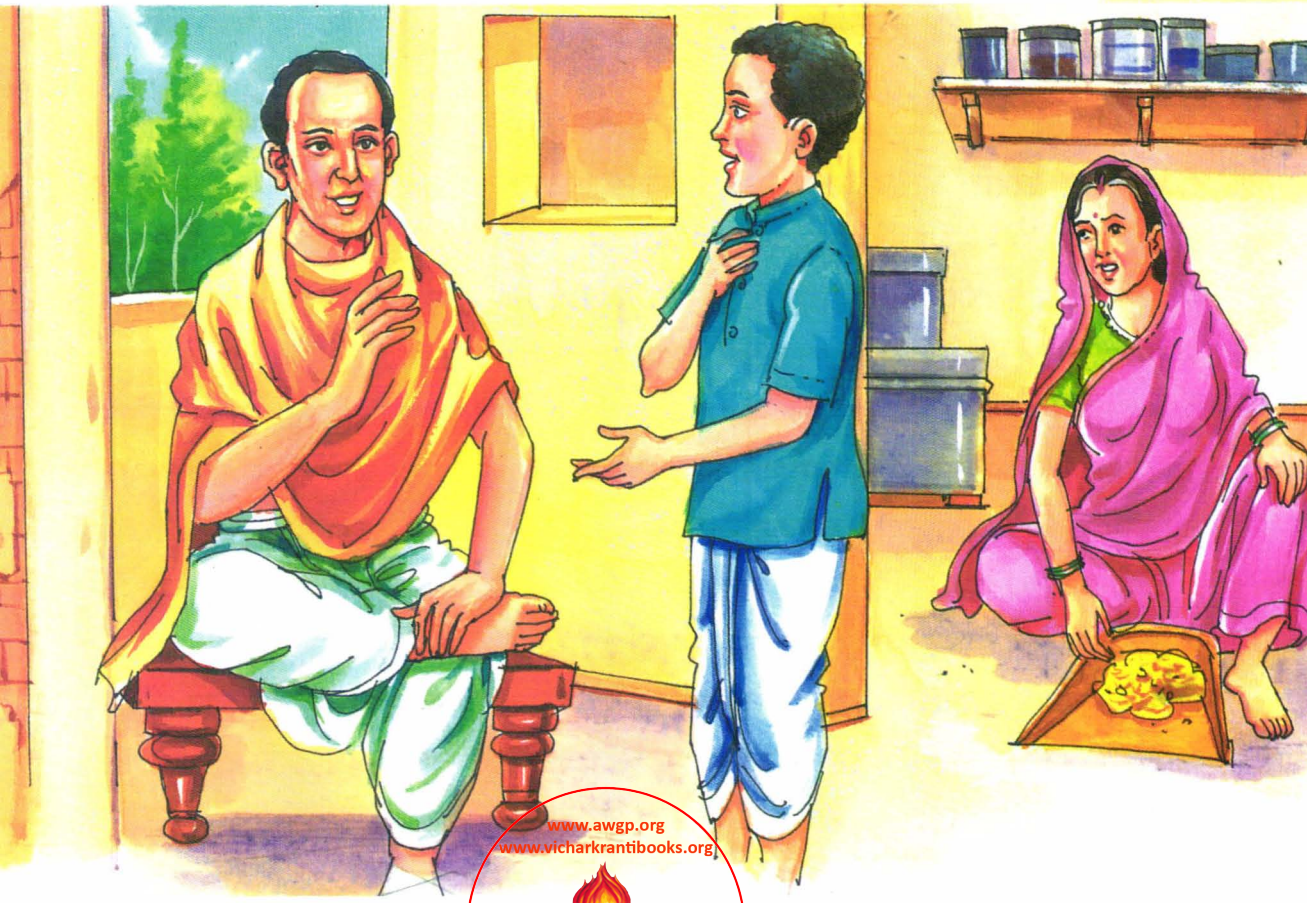

दिया। गाँव के स्कूल की सभी परीक्षाएँ ईश्वरचंद्र ने प्रथम श्रेणी में पास कीं। आगे की पढ़ाई प्रारंभ करने में आर्थिक विवशता आ रही थी। ईश्वरचंद्र ने स्वयं अपनी राह बनाई और आगे पढ़ने के लिए माता-पिता से केवल आशीर्वाद भर माँगा। उसने कहा—"आप मुझे किसी विद्यालय में भरती भर करा दें, फिर मैं आपसे किसी प्रकार का खरच नहीं मागूँगा।"

ऐसा ही किया गया। पिता ने ईश्वरचंद्र को कलकत्ता के एक संस्कृत विद्यालय में भरती करा दिया। विद्यालय में ईश्वरचंद्र ने सेवा, लगन और परिश्रम, प्रतिभा के बल पर शिक्षकों को प्रसन्न कर लिया। उनकी फीस माफ की गई। पुस्तकों के लिए अपने साथियों के साझीदार हो गए और पढ़ाई से बचे समय में मजदूरी कर गुजारे का प्रबंध करने लगे। इस अभावग्रस्तता में ईश्वरचंद्र ने इतना परिश्रम किया कि उन्नीस वर्ष की आयु में पहुँचते-पहुँचते व्याकरण, साहित्य, स्मृति तथा वेदशास्त्र में निपुणता प्राप्त कर ली। यही युवक आगे चलकर ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से विख्यात हुआ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शैतान का सर्वस्व आलस्य

एक बार शैतान का मन अपने काम से ऊबा तो उसने सोचा संन्यास ले लेना चाहिए। अपनी सारी संपत्ति और सवारियाँ उसने बेचनी शुरू कर दीं। बाजार लगा और उस दिन झुंड के झुंड लोग आए और उन्हें खरीदने लगे। नशेबाजी, चुगली, ईर्ष्या, बेईमानी, कुढ़न, शौकीनी, जल्दबाजी, बदहवासी जैसी चीजें लोगों को खूब पसंद आईं और लोगों ने मनमाने दाम देकर इन्हें खरीदा। जो न खरीद सके वे पछताते हुए रह गए। देखते-देखते शैतान का सारा माल बिक गया। अब उसके पास एक ही चीज बची जिसे वह बेचना न चाहता था। खरीददारों में से एक ने कहा—''जब आप सब कुछ छोड़ रहे हैं तो इस एक चीज से इतनी ममता क्यों ? इसे भी बेचकर निश्चिंत हो जाइए न।''

शैतान ने कहा—''यही मेरी सबसे प्रिय, कीमती और करामाती चीज है। जो कुछ मैंने बेचा वह इसके जरिए मैं हासिल कर सकता हूँ। संन्यास में भी मन न लगा तो इसी के सहारे अपना कारोबार फिर शुरू करूँगा। इसे बेच दूँ तो मेरा अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।'' उत्सुक लोगों ने शैतान से पूछा—''कृपया इस वस्तु का नाम तो बता दीजिए।'' उसने गर्व के साथ कहा—''यह है आलस्य। आलस्य के रहते वह सब मिलता ही रहेगा जो मैं चाहता हूँ।''

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

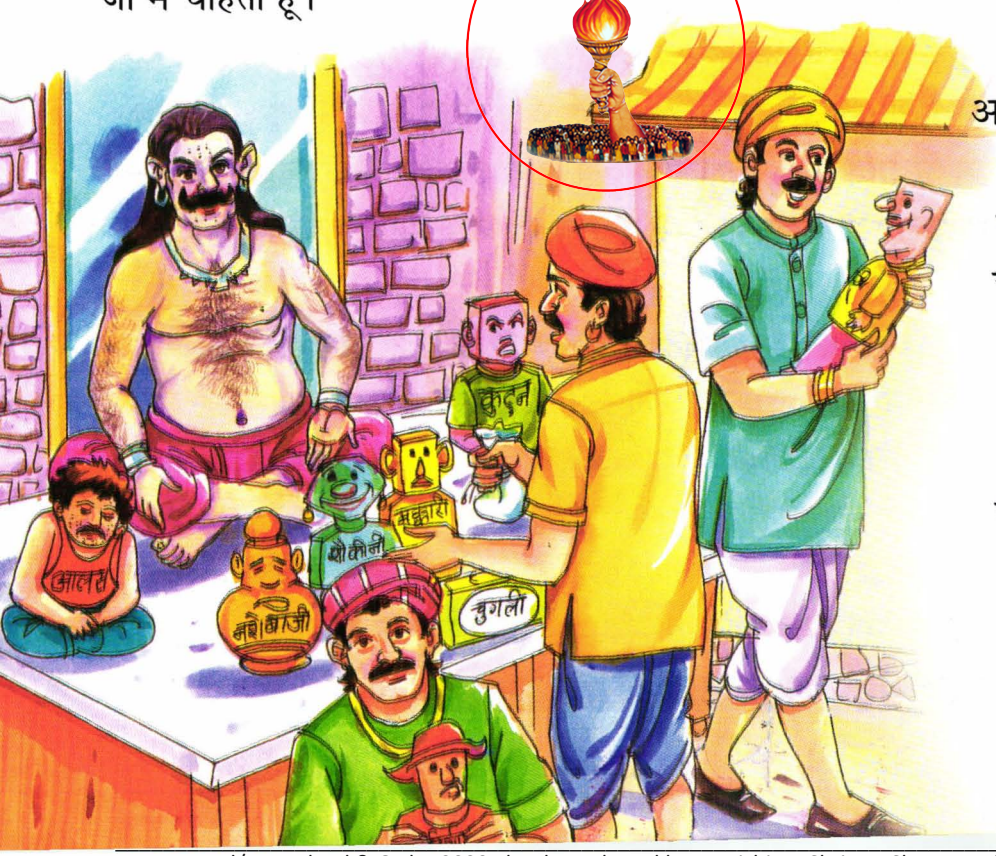

आलस्य अकेला नहीं होता, इसके मित्र भाई जैसे—नशेबाजी, चुगली, बेईमानी, ईर्ष्या आदि कई दुर्गुण स्वयं आदमी में आ जाते हैं। इसलिए आलस्य कभी नहीं करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org